महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 17 मुंबई, 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2013 मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

गुजरात हुआ पानी-पानी

कुदरत के कहर ने अब गुजरात का रुख किया है. पिछले तीन चार दिनों से लगातार हो रही बारिश गुजरात कई शहर समंदर में तब्दील हो गए हैं. ६ जिलों में 12000 से ज्यादा लोग घर बार छोड़ने पर मजबूर हो गए हैं. आसमानी आफत का मिजाज ये कि अगले तीन दिनों तक राहत की उम्मीद नहीं है. कुछ जगहों पर भयंकर बारिश का अलर्ट है. अहमदाबाद।भारी बारिश और जलाशयों में लगातार पानी की आवक बढ़ने से नर्मदा नदी का जलस्तर भी बढ़ गया है। इसके चलते नर्मदा नदी के किनारे के गांवों को अलर्ट कर दिया गया है नर्मदा बांध का जलस्तर 126 मीटर पार हो गया है। उकाई बांध का पानी तापी में छोड़े जाने से सूरत में बाढ़ के हालात बन गए अहमदाबाद समेत राज्य भर में बारिश का जोर बना रहा।

बारिश के चलते वडोदरा और उसके आस-पास के इलाकों के हालात काफी बिगड़ गए हैं। पिछले चौबीस घंटों में राज्य की 101 तहसीलों में बारिश हुई, जिसमें सबसे ज्यादा बारिश वलसाड़ के उमरपाडा एवं सागबारा में 14 इंच, छोटे उदेपुर के क्वांट एवं वडोदरा के झगडिया में 8 इंच, पावी जेतपुर में सात इंच बारिश हुई। उधर, वडोदरा में ओरसंग, अश्विन और मेण नदियों में बाढ़ आने से निकटवर्ती गांवों में पानी भर गया । नेशनल डिजास्टर रिस्पोन्स फोर्स (एनडीआरएफ) एवं फायर ब्रिगेड की टीमें राहत व बचाव कार्य के लिए पहुंच गई । छोटा उदेपुर के एसडीएम के अनुसार नसवाडी तहसील के कुकावटी एवं संखेडा के कडाछला गांवों के प्रभावितों को निकालने के लिए एनडीआरएफ के 30 जवानों को बोट के साथ रवाना किया गया। संखेडा के चामरवाडा एवं पालेज गांव में बाढ़ प्रभावितों को राहत सामग्री भेजी गई।

सस्ती हुई प्याज

35 रुपए पहुंची थोक बाजार में कीमत

महंगे प्याज से निकले उपभोकताओं के आंसू अब कुछ थमते नजर आ रहा हैं। पाकिस्तान और दक्षिण भारत की तरफ से आमद बढने पर थोक में कीमतें घटकर 35 से 50 रुपए प्रति किलो रह गई हैं जिसका असर खुदरा भावों पर भी देखने को मिल रहा है।

एशिया की सबसे बडी फल

(शेष पृष्ठ 2 पर)

न्यूनतम आधारभूत कीमत पर जल्दकपास खरीदी के 100 केंद्र शुरु करेगी सरकार

मुंबई। राज्य सरकार ने न्यूनतम आधारभूत कीमत पर कपास खरीदी के लिए 100 केंद्र शुरू करने का फैसला किया है। कपास खरीदी की सभी आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी कर ली गई हैं। जल्द कपास पणन महासंघ की ओर से खरीदी केंद्र शुरू किए जाएंगे। गुरुवार को कृषि व पणन मंत्री राधाकृष्ण विखे पाटील ने यह जानकारी दी। मंत्रालय में 2013-14 के लिए कपास खरीदी की पूर्व तैयारियों का जायजा लेने के लिए बैठक बुलाई गई थी। इसमें संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। कृषि मंत्री ने कपड़ा मिल, राज्य सहकारी सूत मिल और ठकेदारों से चर्चा कर स्वखर्च योजना शुरू करने के लिए प्रस्ताव भेजने का निर्देश संबंधितों को दिया है। नाफेड की ओर से तैयार किए गए करारनामे के मसौदे की समीक्षा कर उसमें जरूरी संशोधन

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पानी की बचत को जन आंदोलन बनाएं

किसान कम पानी में अधिक उत्पादन के लिए स्प्रिेक्लर - ड्रिप सिंचाई अपनाएं-मुख्यमंत्री

जयपुर, 26 सितज़्बर। मुज़्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने भौगोलिक दृष्टि से देश के सबसे बडे राज्य राजस्थान में पानी की एकप्रतिशत उपलज़्धता को रेखांक्ति करते हुए क्हा कि प्रदेश के क्सिानों को खेती में बूंद-बूंद सिंचाई एवं स्प्रिंक्लर खेती को अपनाने के साथ ही पानी के महत्व एवं बचत को जन-जन तक पहुंचाने के लिये इसे जन आंदोलन बनाना चाहिए।

श्री गहलोत गुरूवार को यहां राज्य कृषि विपणन संस्थान, दुर्गापुरा (जयपुर) में आत्मा योजना के तहत कृषि एवं सज़्बन्धित क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को सज़्मानित करने के लिये आयोजित राज्य-स्तरीय कृषकसज़्मान समारोह में मुज़्य अतिथि के रूप में विचार प्रक्ट कर रहे थे। उन्होंने क्हा कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के क्सिानों को सज़्मानित क्यिा जा रहा है। हमारे इस प्रयास को केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शरद पंवार ने भी अनुकरणीय बताया था। उन्होंने क्हा कि राजस्थान में पानी की क्मी को देखते हुए क्सिानों को क्म पानी में अधिक उत्पादन लेने वाली फ्सलों को अपनाना होगा। उन्होंने क्हा कि प्रदेश में 249 ज़्लॉक है जिनमें से मात्र 30-31 ही सुरक्षित है, शेष सभी ज़्लॉक डार्क जोन में आ गये हैं। भूजल स्तर नीचे जाने की वजह से पानी की

(शेष पृष्ठ २ पर)

सलाखों के पीछे लालू

रांची। सीबीआइ की विशेष अदालत ने सोमवार को अविभाजित बिहार में हुए चारा घोटाले के मामले में महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव के राजनीतिक भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया। मामले में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद, जगन्नाथ मिश्र व जहानाबाद से जदयू सांसद जगदीश शर्मा समेत 45 आरोपियों को दोषी ठहराया गया है। दोषी ठहराए जाने के बाद लालू व 36 अन्य दोषियों को जेल भेज दिया गया। उनके लिए सजा का एलान तीन अक्टूबर को होगा। तीन साल से ज्यादा की सजा वाले मुकदमों में दोषी ठहराए जाने के बाद लालू और जगदीश की लोकसभा सदस्यता रद होनी तय मानी जा रही है। दो साल से ज्यादा सजा पाने वाले दागी जनप्रतिनिधियों को संसद और विधानसभा से दूर रखने के सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले के ये दोनों नेता शुरुआती शिकार हो सकते हैं।

आवश्यकता है

* प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए
*जिला स्तर सेल कॉर्डिनेटर चाहिए
* विज्ञापन हेतु असिसटैंट मैनेजर चाहिए.
संपर्क
022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

जल ही जीवन है

भारत का इतिहास जितना पुराना है उतना ही पुराना भारत में जल सरक्षंण करने का इतिहास। हमारे वेद पुराणो में भी जल के प्रति अतिआस्था रही है। हम सभी जानते कि,जीवन का आधार जल ही है।जल नही है तो जीवन की कल्पना नही कर सकते। जल देवो का बहुमूल्य वरदान है। सभी जानते है जल के महत्व को हमारे देश में एक तरफ नदियां है तो दूसरी ओर मरूस्थल हमारे पूर्वजो ने पानी को संरक्षित करने के लिए कुएँ,तालाब व बावडी का निर्माण किया।

हमारे देश में मरूस्थल में जीवन वर्षो से रहा है। राजस्थान में वर्षा का औसत **350** मिली रहा है, इसलिए इस मरूस्थल में जल सरंक्षण की परंपरा बहोत पुरानी रही है। परंतु आज विकासशीलता के नाम पर सरकारो की अनदेखी के कारण परंपरागत जलस्त्रोत खत्म हो गए है। यही हाल गंगा,जमुना जैसी नदियो का है। कितनी विडंबना है कि हम नदियो को पूजते है,पर उनका स्वच्छ जीवन छीनकर हमने अपना जीवन भी खतरे में डाल दिया है। सभी जानते है यमुना नदी आज जीवन दायी न होकर जहर बांट रही है वही हाल गंगा का है। लाखो करोडो को जल देने वाली गंगा को कही बांध बनाकर तो कही सीधे नालो को जोड़कर जहरीला बनाया जा रहा है। गंगोत्री से लेकर गंगा सागर तक खुद गंगा अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है।

हम जानते के हमारा देश कृषि प्रधान देश है फिर भी लगातार हम खाद्यदान समस्या से जूझते रहे है। इतने वर्षो में हम नदियो को सरंक्षण नही दे पाए। आज तक कोई भी कारगर जलनीति नही बना पाए। महाराष्ट्र सुखे से लड़ता है तो बिहार बाढ़ से पर आज तक सरकार नदियो को नही जोड़ पाई। विपरीत इसके इनकी अनदेखी होती रही है ये कैस विकास है? जहां हम अपनी ही नीवं को लगातार खोखला कर रहे है। जो वर्तमान है अगर वैसा ही चलता रहा तो हमारे उद्योगो की उन्नति,खेती,नदिया,जीवन जल अभाव के साक्षी होगें।

जल की बड़ती हुई मांग,अति उपयोग, प्रदूषण के कारण घटती आपुर्ति,भूमि में घटता जलस्तर जैसी बड़ी चुनौतिया हमारा इतंजार कर रही है। हम कल्पना कर सकते है,जल के बिना भविष्य क्या होगा?

विकास को सुनिश्चिंत करने के लिए जल का मूल्यांकन,कार्यक्षम उपयोग और सरंक्षण आवश्यक हो गए है। अब जरूरी है त्वरित गति से सरकार जलनीति को राष्ट्रनीति बनाए।

ऋतु कपिल (कार्यकारी संपादक)

फसल अवशेषों में आग मत लगाइये, इससे जमीन की उर्वरा शक्ति बढाइये

आर के एस राठौर, उप क्षेत्र प्रबन्धक, इफ़को ,रीवा (म प्र)

हमारे देश में फ़सलों के अवशेषों (Crop Residue) का उचित प्रबन्ध करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है या कहें कि इसका उपयोग मृदा में जीवांश पदार्थ अथवा नत्रजन की मात्रा बढाने के लिये नही किया जाकर इनका अधिकतर भाग या तो दूसरे घरेलू उपयोग में किया जाता है या फ़िर इन्हें नष्ट कर दिया जाता है जैसे कि गेहूं, गन्ने की हरी पत्तियां, आलू, मूली, की पत्तियां पशुओं को खिलाने में उपयोग की जाती है या फ़िर फ़ेंक दी जाती हैं। कपास, सनई, अरहर आदि के तने गन्ने की सूखी पत्तियां, धान का पुआल आदि सभी अधिकतर जलाने के काम में उपयोग कर लिये जाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एक समस्या मुख्य रूप से देखी जा रही है कि जहां हार्वेस्टर के द्वारा फ़सलों की कटाई की जाती है उन क्षेत्रों में खेतों में फ़सल के तने के अधिकतर भाग खेत में खडे रह जाते हैं तथा वहां के किसान खेत में फ़सल के अवशेषों को आग लगाकर जला देते हैं। अधिकतर रबी सीजन में गेहूं की कटाई के पश्चात विशेष रुप से देखने को मिलता है कि किसान अपनी फ़सल काटने के पश्चात फ़सलों के अवशेष (Crop Residue) को उपयोग न करके उसको जला कर नष्ट कर देते हैं। इस समस्या की गंभीरता को देखते हुये प्रशासन द्वारा बहुत से जिलों में तो गेहूं की नरवाई जलाने पर रोक लगाई है तथा किसानों को शासन, कृषि विभाग एवं सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा इस बारे में समझाने के प्रयास किये जा रहे हैं कि किसान अपने खेतों में अवशेषों में आग न लगा कर इसे खेत की जीवांश पदार्थ को बढाने में उपयोग करें ।

इसी प्रकार गांवों में पशुओं के गोबर का अधिकतर भाग खाद बनाने के लिये प्रयोग न करते हुये इसे ईंधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है जबकि इसी गोबर को यदि गोबर गैस संयत्र में उपयोग किया जाय तो इससे बहुमूल्य एवं पोषक तत्वों से भरपूर गोबर की स्लरी प्राप्त कर खेत की उर्वरा शक्ति बढाने में उपयोग करना चाहिये साथ ही गोबर गैस को घर में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है तथा योजना को सफ़ल बनाने हेतु शासन द्वारा गोबर गैस बनाने के लिये अनुदान भी दिया जाता है परन्तु फ़िर भी परिणाम संतोषप्रद नहीं है जबकि जमीन में जीवांश पदार्थ की मात्रा निरन्तर कम होने से उत्पादकता या तो घट रही है या स्थिर हो गई है अत समय रहते इस पर ध्यान देकर जमीन की उर्वराशक्ति बढाने पर ही कृषि की उत्पादकता बढा पाना संभव हो सकता है जो कि देश की बढती जनसंख्या को देखते हुये नितान्त ही आवश्यक है।

हमारे देश में हम फ़सल अवशेषों का उचित उपयोग न कर इसका दुरुपयोग कर रहे हैं जबकि यदि इन अवशेषों को सही ढंग से खेती में उपयोग करें तो इसके द्वारा हम पोषक तत्वों के एक बहुत बढे अंश की पूर्ति इन अवशेषों के माध्यम से पूरा कर सकते हैं।

फ़सलों के विभिन्न अवशेषों में नत्रजन, फ़ास्फोरस एवं पोटाश तत्वों की मात्रा

क्र	फ़सल अवशेष	नत्रजन प्रतिशत	फ़ास्फोरस प्रतिशत	पोटाश प्रतिशत
1	गेहूं का भूसा	0.53	0.10	1.10
2	जौ का भूसा	0.57	0.26	1.20
3	गन्ने की पत्तियां	0.35	0.10	0.60
4	गन्ने की खोई	2.25	0.12	.
5	धान की पुआल	0.36	0.08	0.70
6	राईसरसों का तना	0.57	0.28	1.40
7	मक्का की कडवी	0.47	0.57	1.65
8	बाजरे की कडवी	0.65	0.75	2.50
9	धान की भूसी	0.40	0.25	0.40
10	मूंगफली का छिलका	0.70	0.48	1.40
11	आलू	0.52	0.09	0.85
12	मटर की सूखी पत्तियां	0.35	0.12	0.36
13	[illegible] की सूखी पत्तियां	2.65	0.41	2.42
14	[illegible] की सूखी पत्तियां	1.50	0.45	2.50

उपरोक्त तालिका को देखकर हम स्पष्ट रूप से अनुमान लगा सकते है कि कितनी अधिक मात्रा में हम अपने देश में मिट्टी के आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति कर सकते हैं विदेशों में जहां अधिकतर मशीनों से खेती की जाती है अर्थात पशुओं पर निर्भरता नहीं है वहां पर फ़सल के अवशेषों को बारीक टुकडों में काटकर मिट्टी में मिला दिया जाता है यद्दपि वर्तमान में हमारे देश में भी इस कार्य के लिये रोटावेटर जैसी मशीन का प्रयोग प्रारम्भ हो गया है जिससे खेत को तैयार करते समय एक बार में ही फ़सल अवशेषों को बारीक टुकडों में काट कर मिट्टी में मिलाना काफ़ी आसान हो गया है। जिन क्षेत्रों में नमी की कमी हो वहां पर फ़सल अवशेषों को कम्पोस्ट खाद तैयार कर खेत में डालना लाभप्रद होता है।

आस्ट्रेलिया, रूस, जापान व इंग्लैंड आदि विकसित देशों में इन अवशेषों को कम्पोस्ट बनाकर खेत में डालते हैं या इन्हें खेत में अच्छी प्रकार मृदा में मिलाकर सडाव की क्रिया को सुचारु रुप से चलाने के लिये समय समय पर जुताई करते रहते हैं।

फ़सल अवशेषों का उचित प्रबन्ध करने के लिये आवश्यक है कि अवशेष (गन्ने की पत्तियों, गेहूं के डंठलों) को खेत में जलाने की अपेक्षा उनसे कम्पोस्ट तैयार कर खेत में प्रयोग करें। उन क्षेत्रों में जहां चारे की कमी नहीं होती वहां मक्का की कडवी व धान की पुआल को खेत में ढेर बनाकर खुला छोडने के बजाय गडढों में कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करना आवश्यक है। आलू तथा मूंग फ़ली जैसी फ़सलों को खुदाई कर बचे अवशेषों को भूमि में जोत कर मिला देना चाहिये। मूंग व उर्द की फ़सल में फ़लियां तोडकर खेत में मिला देना चाहिये। इसी प्रकार यदि केले की फ़सल के बचे अवशेषों से यदि कम्पोस्ट तैयार कर ली जाय तो उससे 1.87 प्रतिशत नत्रजन ३.४३ प्रतिशत फ़ास्पोरस तथा 0.45 प्रतिशत पोटाश मिलता है।

खेतों के अन्दर सस्यावशेष प्रबन्ध . (Management of Crop Residues)

फ़सल की कटाई के बाद खेत में बचे अवशेष घास..फूंस, पत्तियां व ठूंठ आदि (Crop Residue) को सडाने के लिये किसान भाई फ़सल को काटने के पश्चात २०-२५ किग्रा नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से छिडक कर कल्टीवेटर या रोटावेटर से काटकर मिट्टी में मिला देना चाहिये इस प्रकार अवशेष खेत में विघटित होना प्रारम्भ कर देंगे तथा लगभग एक माह में स्वंय सडकर आगे बोई जाने वाली फ़सल को पोषक तत्व प्रदान कर देंगे क्योंकि कटाई के पश्चात दी गई नाइट्रोजन अवशेषों में सडन की क्रिया (अम्दस्ज्देूग्दह) को तेज कर देती है। अगर फ़सल अवशेष खेत में ही पडे रहे तो फ़सल बोने पर जब नई फ़सल के पौधे छोटे रहते हैं तो वे पीले पड जाते हैं क्योंकि उस समय अवशेषों के सडाव में जीवाणु भूमि की नाइट्रोजन का उपयोग कर लेते है तथा प्रारम्भ में फ़सल पीली पड जाती है अत फ़सल अवशेषों का प्रबन्ध करना अत्यन्त आवश्यक है तभी हम अपनी जमीन में जीवांश पदार्थ (Organic matter) की मात्रा में वृद्धि कर जमीन को खेती योग्य सुरक्षित रख सकते हैं।

पोषक तत्वों से भरपूर जैविक खाद : वर्मीकम्पोस्ट

सौरभ पाण्डेय

वर्मीकम्पोस्ट (vermicompost) एक ऐसी खाद हैं, जिसमें विशेष प्रजाति के केंचुओं द्वारा बनाई जाती है। केंचुओं द्वारा गोबर एंव कचरे को खा कर, मल द्वारा जो चाय की पत्ती जैसा पदार्थ बनता हैं। यही वर्मीकम्पोस्ट हैं। यह खाद अब तक किसी प्रकार से तैयार की गई खाद के मुकाबलें कई गुणा अधिक पोषक तत्वों से भरपूर हैं। केंचुए की खाद आम देषी खाद से आठ गुणा, भेड़, बकरी की मींगनी की खाद से चार गुणा एंव मुर्गी की बींट इत्यादि से दो गुणा अधिक कारगर विभिन्न प्रयोगों में आंकी गई हैं। दूसरी विशेषता केंचुए की खाद ठंड़ी खाद हैं। जबकी गोबर एंव मुर्गी की बीट गर्म खाद होने के कारण इसे केंचुए की खाद की अपेक्षा अधिक पानी की आवश्यकता होती हैं। इसकी तीसरी विशेषता यह हैं कि इस खाद को किसी भी समय दिया जा सकता है। रबी फसलों में इस खाद के उपयोग से पाला पडने की समस्या से बहुत हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

केंचुए की खाद (नेस्म्म्दस्ज्दे) बनाने का तरीका :-

इस खाद के निर्माण हेतु प्रत्येक घर एंव/गांव में ही आसानी से उपलब्ध गोबर तथा कचरा एवं केंचुए द्वारा छायादार स्थान पर उचित पानी की उपलब्धता पर बहुत - कम लागत (औसत 20 से 30 पैसे प्रति किलो) में बिना किसी विषिष्ट उपकरणों के, हम खुद के लिए एवं अधिक उत्पादन कर दूसरों को बेचने के लिए इस खाद को तैयार कर सकते हैं।ह

केंचुए की खाद बनाने हेतु गोबर, कचरा, पानी एवं छायादार स्थान लगभग 6-8 फिट ऊँचाई युक्त स्थान का चुनाव किया जाता है। बेडे क़ी लम्बाई गोबर की खाद की उपलब्धता पर निर्भर करती हैं। परंतु चौड़ाई ३ फीट रखी जाती हैं। उपरोक्त बेड़े पर 3 से 4 इंच मोटी कचरे की परत लगानी चाहिए। यदि गोबर हो तो एक से डेढ़ फिट ऊंचाई तक इस बेडे क़ो भर देते हैं और इसमें उपयुक्त नमी बनाये रखते हैं। बेडे क़ो गीला करने कs 2-3 दिन बाद केंचुए छोड़ दिये जाते हैं। बेडे में उपयुक्त नमी बनायें रखने हेतु पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। नमी कम होने पर केंचुए मर जाते हैं। बेडे में केंचुए छोड़ने के बाद इसको घास- फूस तथा पत्तियों के कचरे से ढ़क दिया जाता हैं एवं ऊपर से बोरी द्वारा ढ़क दिया जाता हैं। इस प्रक्रिया से उचित नमी एवं रोशनी कम होने के कारण केंचुए लगातार सक्रिय बने रहते हैं। वर्षा एवं सर्दी का मौसम छोड़कर गर्मी में हर रोज पानी का छिकाव करते रहना चाहिए 35-45 दिनो के अंदर उपरोक्त कचरा/ गोबर वर्मीकम्पोस्ट में बदल जाता हैं। दस फुट लम्बाई, तीन फुट चौड़ाई तथा डेढ़ फुट ऊंची बेड़ में 4-5 क्विंटल गोबर आता हैं। इससे 60-70% तक खाद तैयार होती हैं। तैयार केंचुए की खाद से केंचुए अलग करने हेतु क्यारी की उपरी सतह से 2-3 इंच तक गुड़ाई कर देवें। ऐसा करने से केंचुए नीचे चले जाते हैं। तथा ऊपर की खाद को अलग कर दुबारा गुड़ाई कर दें। इस तरह केंचुए एवं खाद को अलग-अलग किया जा सकता हैं। 10 फीट की लम्बाई की एक युनिट के लिए 10 किलोग्राम केंचुए केन्द्र की ओर से राष्ट्रीय सम विकास योजना एवं आत्मा के सौजन्य से नि:षुल्क दिये जाते हैं।

केंचुए की खाद से होने वाले लाभ

वर्मीकम्पोस्ट मिट्टी में रोकने की क्षमता में अप्रत्याषित वृध्दि करती हैं और पौधों को सभी पोषक तत्व उपलब्ध कराती हैं। खाद्य फसलों में 30-50 प्रतिषत, चारे वाली फसलों में 40 प्रतिषत एवं फल व सब्जियों में 30-100 प्रतिषत तक वृध्दि देखी गई हैं। फसलों एवं फल व सब्जियों की गुणवत्ताा रंग-रूप, पोष्टिकता, स्वाद में तुलनात्मक रूप से आच्चर्यजनक वृध्दि होती हैं। फसलों में कम पानी/ सिंचाई की आवष्यकता । कम खर्च द्वारा अधिक लाभ प्राप्त करना।

अधिक मात्रा में उत्पादन कर स्वरोजगार को बढ़ाना।

सस्ती हुई...

एवं सब्जी मंडी के प्रधान राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि बारिश के थमने के साथ ही प्याज की कीमतें औंधे मुंह नीचे आने की उम्मीद है। शर्मा ने कहा कि एपीएमसी की तरफ से बेचे जा रहे प्याज की कीमत घटाकर 40 रुपए 45 रुपए और 52 रुपए कर दी गई है। मंगलवार को दामों में और कमी किए जाने की उम्मीद है।

सरकार न्यूनतम...

की भी सूचना दी गई ।

महासंघ को नाफेड से 2008-09 की बकाया राशि वसूलने के निर्देश

कपास पणन महासंघ और महाराष्ट्र राज्य सहकारी पणन महासंघ के सहयोग से धान, सोयाबीन, अरहर, उड़द और मूंग की दाल इत्यादि अनाज की खरीदी के लिए बैठक बुलाने का निर्देश दिया गया है। साथ ही नाफेड के पास महासंघ की 2008-09 की बकाया राशि वसूली के लिए प्रयास करने का निर्देश कृषि मंत्री ने अधिकारियों को दिया है।

पानी की बचत...

गुणवत्ता खराब हो रही है। श्री गहलोत ने क्हा किअब समय आ गया है किजब पानी की क्मी केकारण हमें ड्रिप एवं स्प्रिंक्लर खेती को अपनाना होगा। उन्होंने क्सिानों को बताया किभूजल क सर्वे क्रने केलिये क्ल शुक्र्वार को दौसा जिले में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री श्री हरीश रावत की उपस्थिति में एज़्यूफर मैंपिग पायलट परियोजना केतहत 'हैलीबोर्न जियोफिजिक्ल सर्वे' क शुभारज़्भ क्यिा जा रहा है। श्री गहलोत ने क्हा किप्रदेश में 28400 हैज़्टेयर क्षेत्र में बूंद-बूंद सिंचाई तथा 70 हजार हैज़्टेयर में स्प्रिंक्लर खेती हो रही है। राजस्थान स्प्रिंक्लर सिंचाई में देश में नज़्बर एकपर है। जरूरत इस बात की है किफसल को उसकी आवश्यक्ता केअनुसार ही पानी दिया जाये ताकिफसल की गुणवत्ता बढ़ने केसाथ ही पानी क समुचित उपयोग हो सके। उन्होंने प्रगतिशील क्सिानों क आह्वान क्यिा किवे अपने साथी क्सिानों को पानी केमहत्व को समझाये और उन्हें क्म पानी में अधिकउत्पादन लेने केलिये प्रेरित करें

सब्जियो का महत्व एव खीरा वर्गीय फसलो के कीट और रोग एवं उनका प्रबन्ध

डा. बी. एल. जाखड़, मनोज कुमार जाट' और अरविन्द सिंह तेतरवाल'
कृषि अनुसंधान संस्थान, लाडोल (सरदार कृषि नगर दातीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, एस.के. नगर गुजरात)
'कीट विज्ञान विभाग कृषि महाविद्यालय,
चौ. च. सि., हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

सब्जियों का महतव (Importance of vegetables)

मनुष्य के आहार में सब्जियो का बड़ा महत्व है। सन्तुलित आहार एवं स्वास्थ्य के अनुरक्षण के लिए सब्जियां आवश्यक होतंी है। कहते है कि स्वस्थ तन तो स्वस्थ मन। स्वस्थ तन के लिए प्रोटीन, कर्बोहाइड्रेट, वसा,, खनिज लवण और विटामिनों से पूर्ण पोष्टिक आहार आवश्यक है।ताकि हमारा शरीर मानसिक, मनोवैज्ञनिक और नैतिक शक्ति रूप से भी स्वस्थ रहे। प्रोटीन प्राप्ति के दो स्त्रोतों मे प्शु प्रोटीन तथा वानस्पति प्रोटीन प्रमूख है। संतुलित आहार में वानस्पति प्रोटीन जो कि सब्जियों से प्राप्त होता है। का अपना एक विशेष स्थान है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई. सी. एम. आर) ने संतुलित आहार के लिए 300 ग्राम प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति के लिए सब्जी खने की संस्तुति की है जिसमें 125 ग्राम पत्तेदार सब्जियां, 100 ग्राम जड़ एवं कंद तथा 75 ग्राम अन्य सब्जियां होनी चाहिए। लेकिन सब्जी की उपलब्ध ाता मात्र 210 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है यदि उचित ढंग से नियमपूर्वक इनका उपयोग किया जाए तो किसी भी सोन्दर्य प्रसाध ान के प्रयोग की अपेक्षा इनसे त्वचा अधिक साफ व नरम और आंखे ओजवान बनती है।

खनिज लवण : (उपदमतंसेसज) मानव शरीर की उचित वृद्धि और विकास के लिए कम से कम उस खनिजो की आवश्यकता होती है। इनमे कैल्शीयम, लोहा, तथा फासफोरस तत्वो की आवश्यकता काफी होती है और सब्यिों को छोड़ अन्य किसी भी खाद पदार्थ मे इनकी पर्याप्त मात्रा नही पायीं जाती है। उपर्युक्त खनिजो के अतिरिक्त सब्जियो से आयोडिन तथा सोडियम जैसे तत्व भी मिलते है जो यद्यपि अत्यन्त अल्पमात्रा मे ही पाए जाते है। तो भी मानव शरीर के लिए इनका बडा महत्व है। कुछ सम्पूर्ण खनिजो का विवरण निचे दिया जा रहा है।

1.कैल्शीयम : (बंसबपनउ) हडियो को मजबूज तथा शरीर को रोग रोधी बनाने हेतु इसकी आवश्यकता होती है। उसके अभाव मे बच्चे सुखा रोग व चिडचिडापन तथा मन्दित वृदि के शिकर हो जाते है। आहार मे कैल्शीयम की कमी के रहने से आस्टेमेलेशिया (वेजमवउंसंपं) होने के कारण शिशू जन्म मे कष्ट होता है। यह शरीर मे लौह की बचत मे सहायक होता हैं चौलाई, पालक, मेंथी, परवल, हरी मिर्च, धनिया, सेम, बन्द गोभी ,गाजर, फुल गोभी , प्याज तथा टमाटर से कैशीयम की पूर्ति होती है।

2.लोहाः (पतवद) फलों की अपेक्षा सब्जियों मे लोहा की मात्रा अधिक पायी जाती है। शरीर की आवश्यकता का अधिकांश लौहा हरी पतियों से टी प्राप्त किया जा सकता है और हरी पतियां पोषण–जनित रत्काल्पता तक का सुगमता से उपचार कर सकती है। लोहा लाल रूधिर कणिकाओं का भी एक अनिवार्य अंग है तथा शरीर में पाया जाने वाला सबेन्तिम आक्सीजन संवाहक है। इसे पालक, सलाद, बन्द गोभी, मटर, सेम, चौलाई, मैंथी व टमाटर आदि से प्राप्त किया जा सकता है।

3ण फास्फोरसः(चीवेचीवतौद्ध शरीर के सभि सक्रिय उत्तकों के लिए यह अनिवार्य तत्व है। हडिडयों मृदु उत्तकों की कोशिकाओं के गुणन तथा उततकों में उचित द्रवअेय के अनुरक्षण के लिए इसकी आवश्यकता पड़ती है उर्जा नियुक्ति करने वाले कार्बोहाइड्रेटों के आक्सीकरण मे भी इसका, महत्वपूर्ण योगदान रहता है । प्याज , लहसून, परवल, मूली, शलजम, कददू के पते , अरबी, आलू, गाजर तथा फूल गोभी प्रचूर मात्रा मे प्राप्त किया जा सकता है।

विटामिनस (अपजंउपदे): सब्जियों मे निम्नलिखित विटामिन पाये जाते है।

विटामिन 'ए' (टपजंउपद ।) यह वसा– विलेय तथा वृदि और जनन के लिए आवश्यक होता है। भोजन मे इसकी कमी के कारण रंतौधी, पथरी, मुहांसे, त्वचा का सुखापन जैसे कई बिकार उत्पन्न हो जाते है। शरीर मे विटामिन 'ए' की समुचित मात्रा उपलब्ध होने से आंखे ओजवान रहती है। वृदि सामान्य होती है तथा आंखे व श्वास–प्रणाली के विभिन्न अंग उत्तम दया मे रहते है इस विटबमिन को गाजर, मटर, पालक, शलजम, चुकन्दर, टमाटर, चोलाई, धनिया, पत्तागोभी, मूली, हरी मिर्च तथा मेंथी सब्जियों से प्राप्त किया जा सकता है। सब्यिो की हरी पत्तियां खने से हमें सीधे कैरोटिन नामक पदार्थ प्राप्त होता है। जो शरीर के अन्दर विटामिन 'ए' मे परिवर्तित हो जाता है।

विटामिन 'बी– (अपजंउपदे श्ठश्द्ध इसको थइमीन भी कहा जाता हैं । इसकी कमी से बेरी बेरी रोग ,भूख मे कमी, भार मे कमी तथा शरीर के तापमान मे गिरावट आदि विकार उत्पन्न हो जाते है।

कृत्रिम पैर की सुविधा अब विकलांग पशु-पक्षियों के लिए

दिल्ली पशुपालन करनेवाले पशुप्रेमियों के लिए अच्छी खबर है अगर किसी कारणवश पशु या पक्षी विकलांग हो जाये तो उसके कृत्रिम अंगों की सुविधा श्री बिंदाला सवीदय ट्रस्ट द्वारा की जा रही हैं यह संस्था पशु पक्षियों की विकलांगता को दूर करने के लिए कृत्रिम पैर तैयार करती है।

विकलांगों के लिए सहायक यंत्रों पर प्रगति मैदान में चल रहे राष्ट्रीय मेले 'स्वावलंबन' में कच्छ से आई संस्था श्री बिंदाला सवीदय ट्रस्ट पशु-पक्षियों की विकलांगता को दूर करती है। यह संस्था इंसानों की तर्ज पर पशु-पक्षियों की विकलांगता को दूर करती हैं संस्था के विशेषज्ञ पशु-पक्षियों के क्षतिग्रस्त पैरों की जांच करते हैं उसके अनुसार पैर डिजाइन करते हैं और उन्हें फिट करते हैं। अब तक गाय, बैल, ऊंट, घोड़े, कुत्ते और मोर के कृत्रिम पैर डिजाइन कर चुके हैं साथ ही विकलांग पशु-पक्षियों के केयरटेकर को भी प्रशिक्षित करते है

खाद्य सुरक्षा एक सौगात

भिवानी : जनस्वास्थ्य अभियात्रिकी तथा आबकारी एवं कराधान मंत्री किरण चौधरी ने कहा कि खाद्य सुरक्षा अधिनियम गरीबों के लिए यूपीए अध्यक्षा सोनिया गाधी की तरफ से एक सौगात है। जो भी इस योजना के लिए पात्र है, वे इसके लिए जल्द आवेदन करे ताकि उनको इस योजना के तहत सस्ता अनाज मिल सके।

मंत्री किरण चौधरी गाव भाखड़ा में दो करोड़ 26 लाख रुपए की लागत ने बनने

- 1 से 7 अक्टूबर तक वन्य-प्राणी संरक्षण सप्ताह

वन्य-प्राणी संरक्षण के प्रति आम लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिये हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूरे प्रदेश में १ से 7 अक्टूबर, 2013 तक वन्य-प्राणी सप्ताह मनाया जायेगा। मुख्य वन्य-प्राणी अभिरक्षक एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य-प्राणी) श्री नरेन्द्र कुमार द्वारा प्रदेश के सभी क्षेत्र संचालकों और वरिष्ठ अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं।

वन्य-प्राणी संरक्षण सप्ताह-2013 के दौरान वन्य-प्राणी संरक्षण संबंधी पोस्टर, फोटोग्राफ्स, पेंटिंग प्रदर्शनी, निबंध एवं पेन्टिंग प्रतियोगिता, स्कूली बच्चों के लिये राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य में निःशुल्क भ्रमण, छविगृहों में वन्य-प्राणी स्लाईड्स का प्रदर्शन, विभिन्न शहरों में केबल टी.वी. के माध्यम से वन्य-प्राणी विषय फिल्मों का प्रदर्शन, रेडियो-दूरसंचार के माध्यम से प्रचार किया जायेगा।

वन्य-प्राणी संरक्षण सप्ताह के दौरान स्कूल, कॉलेज, संस्थाओं में वन्य-प्राणी संरक्षण संबंधी शपथ ग्रहण या संकल्प समारोह किये जायेंगे। छात्र-छात्राओं के अलावा आम लोग भी कार्यक्रमों में भाग ले सकेंगे।

राजीव गाँधी ग्रामीण विद्युती करण योजना

राज्य शासन ने 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिये राजीव गाँधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के दिशा-निर्देशों के तारतम्य मे राज्य-स्तरीय स्थाई समिति का पुनर्गठन किया है। समिति के अध्यक्ष मुख्य सचिव रहेंगे।

समिति के सदस्य में अपर सचिव/प्रमुख सचिव वित्त, प्रमुख सचिव/सचिव ऊर्जा, सचिव राजस्व, सचिव वन, सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास, सचिव गृह (पुलिस), चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर आर.ई.सी. लिमिटेड भोपाल, एडीशनल जनरल मैनेजर एनटीपीसी/एनईएससीएल और पूर्व, मध्य और पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के प्रबंध संचालक शामिल हैं। समिति की बैठक का समन्वय ऊर्जा विभाग द्वारा किया जायेगा। समिति योजना के परियोजना प्रतिवेदन की अनुशंसा, प्रगति, क्वालिटी कंट्रोल, अंतर्विभागीय मुद्दों के निराकरण के लिये आवश्यक कार्यवाही, परियोजना पूर्णता प्रतिवेदन के अनुमोदन और योजना के त्वरित क्रियान्वयन एवं मॉनीटरिंग आवश्यक कार्यवाही करेगी।

उल्लेखनीय है कि राज्य शासन ने राजीव गाँधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के दिशा-निर्देशों में योजना की मॉनीटरिंग के लिये 10वीं और 11वीं पंचवर्षीय योजना अवधि में राज्य-स्तरीय मॉनीटरिंग कमेटी का गठन फरवरी 2006 और पुनर्गठन अक्टूबर 2010 को किया था।

मनरेगा मजदूरी में हो वृध्दि

शिमला हिमाचल प्रदेश के किसान मनरेगा मजदूरी संतुष्ट नही है इसलिए हिमाचल प्रदेश राज्य पंचायत परिषद ने मनरेगा के तहत दी जानेवाली मजदूरी में बढ़ोतरी करने की मांग की है परिषद की अध्यक्षा प्रेम लता ठाकुर की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह निणर्य लिया गर्या

प्रदेश कार्यकारणी की इस बैठक में पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को निचले स्तर तक परिषद के साथ जोड़े जाने सम्बंधी एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किया गया। साथ ही बैठक में राज्य में संगठन को और सुदृढ़ बनाए जाने पर भी विचार किया। पंचायती राजसंस्थाओं के प्रतिनिधियों को परिषद के साथ निचले स्तर तक संबंधो को मजबूत करने पर प्रस्ताव पारित किया गर्या

कारोबार

ग्रामीण सड़कों के रखरखाव पर 150 करोड़ खर्च होंगे - शिवराज सिंह चौहान

किसान सड़क निधि से ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों के रखरखाव पर इस वर्ष 150 करोड़ रूपये खर्च किये जायेंगे। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में आज यहाँ सम्पन्न किसान सड़क निधि साधिकार समिति की बैठक में यह जानकारी दी गई। बैठक में कृषि मंत्री डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया और लोक निर्माण मंत्री श्री नागेन्द्र सिंह भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बैठक में कहा कि ग्रामीण सड़कों के रखरखाव के कार्य को प्राथमिकता से किया जाये। किसान सड़क निधि से करवाये जा रहे कार्यों की गुणवत्ता की लगातार मॉनीटरिंग की जाये। बैठक में बताया गया कि किसान सड़क निधि से मण्डी समितियों द्वारा प्रदेश में स्वीकृत 203 सड़क कार्य में से 72 पूरे हो चुके हैं तथा शेष में कार्य जारी है। इस निधि से प्रदेश में 100 बहुउद्देश्यीय वाणिज्यिक केन्द्र बनाये जायेंगे, इसके लिये १३० करोड़ रूपये स्वीकृत किये गये हैं। इसके अलावा मण्डी समितियों को विकास कार्यों के लिये जारी वर्ष में 100 करोड़ रूपये स्वीकृत किये गये हैं। बैठक में मुख्य सचिव श्री आर.परशुराम, अपर मुख्य सचिव श्री अंटोनी डिसा, अपर मुख्य सचिव श्रीमती अरूणा शर्मा, कृषि उत्पादन आयुक्त श्री एम.एम. उपाध्याय, प्रमुख सचिव कृषि श्री आर.के. स्वाई, मण्डी आयुक्त श्री महेन्द्र ज्ञानी, मुख्यमंत्री के सचिव श्री विवेक अग्रवाल और श्री हरिरंजन राव उपस्थित थे।

लहसुन और प्याज की नई किस्म

करनाल । कई क्षेत्रों में बिना प्याज के काटे ही आखों से आंसू निकल रहे है तो कहीं पर प्याज ओर लहसुन किसानों के लिए सौगात बनकर आये है। यह कारनामा हरियाणा के करनाल जिलें में हुआ है। यहाँ पर किसानों को बागवानी की राह पर चलने के लिए विशेष लहसुन और प्याज की किस्म बाटी जा रही है।

यमुना सफेद पांच के नाम से किसानों को लहसून की यह वरायटी दी गई है, जबकि इस वरायटी का नाम जी189 है। लहसून की किस्म की खास बात यह है कि उसमें तीखापन पुराने जमाने की याद दिला देता है।

एक सपने की उडान - जैन इरिगेशन

जैन इरिगेशन के संस्थान के संस्थापक पद्मश्री भवंरलाल जैन के साथ एक कहावत सच में चरितार्थ होती है। " सोने पे सुहागा " एक गांधीवादी उदार विचारधारा एवम भारत वर्ष की जीवन रेखा " कृषि " का समागम है जैन इरिगेशन। महाराष्ट्र के जलगांव के छोटे कस्बे,वकोड में 12 दिसंबर 1937 को साधारण किसान के परिवार में जन्म लेने वाले श्री भवंरलाल जैन कृषि क्षेत्र में इतनी उन्नति करेंगे किसी ने भी नही सोचा था। कृषि को आधुनिकता की ओर कैसे लेकर जाना है जिससे की साधारण से साधारण किसान भी उन्नति कर सके। इसी लालसा में उन्हें बचपन से ही कृषि से जोडे रखा यहा तक की उनका उठना बैठना खाना पीना किसानो के बीच होने लगा। फल स्वरूप उन्होंने किसानो की खुशहाली के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। कृषि - "एक भविष्य का व्यवसाय " इस वाक्यांश से प्रेरित होकर नौजवान भवंरलाल जैन ने कृषि व्यवसाय से सबंधित उपकरणो का व्यापार एक सुदृढ वितरक के रूप में प्रारंभ किया। उन्होंने ट्रेक्टर,सिचांई में काम आने वाले स्प्रिंकलर सिस्टम पी.वी.सी.पाईप एवमं अन्य वस्तुओ का वितरण कर प्रभावी रूप से अपनी पहचान बनाई। कृषि व्यवसाय के विशाल एवम वृहद स्तर को अपनी योजनाओ में शामिल करते हुए उन्होंने खाद्य,बीज एवं उर्वरको के साथ कीटनाशक पदार्थो के विपणन में भी अपनी पैठ जमाई। इसी का परिणाम था की उनका व्यापार का विक्रय स्तर जो वर्ष 1963 में एक मिलियन था ओ 1978 तक 110 मिलियन तक जा पहुंचा। अपनी सतत प्रयासो भावी योजनाओ को सफल क्रियांन्वत एवं सफलता भरे इन वर्षो में नया उदाहरण प्रस्तुत किया। इसी का परिणाम है "जैन इरिगेशन सिस्टम लि.और सहायक कंपनियां।

वितरण एवं व्यापार को बढाते हुए जैन इरिगेशन ने माइक्रो इरिगेशन सिस्टम,स्प्रिकलर इरिगेशन सिस्टम, पी.वी.सी.पाईप और फिटिंग, पॉलिथिलिन पाईप और फिटिंग,प्लॅस्टिक शीट,प्रोसेस फूड,प्रोटेक्टड कल्टीवेशन, रेनेवन एनर्जी और कृषि से जुडे अन्य उपकरणो में अपार ख्याति प्राप्त की।

एक सपने की उड़ान ही है,जिसने अपने प्रतिष्ठान को इस बुलंदियो तक पहुंचाया उनका नाम है भवंरलाल जैन।

- जयदीप माथुर

प्याज की फसल में मेगनेट बहुत लाभदायक

अलवर - हिन्दकेम कार्पोरेशन मुंबई का उत्पाद मेगनेट प्याज के फसल के लिए बहुत लाभदायक है। यह जानकारी अलवर जिले के गाँव नागॅल तोडियार,मालाखेडा के किसान प्रभुदयाल यादव ने सृष्टी एग्रो को दी। प्रभु दयाल यादव ने बताया कि,वह पिछले **3-4** वर्षो से मेगनेट का प्रयोग प्याज तथा सरसो की फसल में कर रहे है। मेगनेट के प्रयोग से प्याज की पैदावार के साथ साथ उसकी गुणवत्ता में बढोतरी हुई है। उन्होंने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि,प्याज की फसल में मेगनेट के उपयोग से प्याज मोटी तथा चमकदार पैदा हुई। तथा उसकी भंडारण क्षमता भी लंबे समय तक रही। उलेखनीय है कि प्रभु दयाल यादव क्षेत्र के अग्रणी किसान है। एवमं कृषि नई नई तकनीकी का उपयोग कर उत्पादन बढाने का प्रयास करते रहते है।

किर
समै
फसल
पाया है।
बीमारी
किसान
मौसम
किसानों
है,जबवि
प्रयोग

मूँगफली में समेकित रोग प्रबंधन

के. एस.जादौन,पि. पि. थिरुमलाईसामी, एवं राम दत्ता
मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, ईवनगर रोड, जूनागढ़ – 362001

मूँगफली की खेती भारत में खरीफ,रबी, गर्मी एवं वसंत ऋतु की फसल के रूप में की जाती है। प्रमुख मूँगफली उगाने वाले राज्यों में गुजरात,आंध्रप्रदेश,तमिलनाडु,कर्नाटक,राजस्थानऔर महाराष्ट्र हैं जो की क्षेत्रफल तथा उत्पादन मेंलगभग 80 प्रतिशत योगदान देते हैं। रबी मूँगफली की औसत उपज 1600 किलोग्राम/हेक्टेयर के आसपास हैं जबकि खरीफ मूँगफली लगभग की उपज 1000 किलोग्राम/हेक्टेयर ही है जो की प्रमुख देशों में उत्पादित हो रही मूँगफली की तुलना में कम है। इसके लिए फसल की वर्षा आधारित खेती,एक ही किस्म को बार-बार लेना और रोगों तथा कीटों के द्वारा नुकसान को एक साथ मिलाकर जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। यह फसल कई कीट और रोगों की चपेट में आती हैं मूँगफली को प्रभावित करने के लिए ५५से अधिक रोग ज़नक़ सूचि बद्ध किये गये हैं, इनमें,तना विगलन,ग्रीवा विगलन,अल्फा जड़, टिक्का रोग अगेती एवं पछेती),रोली तथा कलिका एवं तना ऊत कक्ष य प्रमुख रोग हैं, जो साधारणतया खरीफ एवं रबी दोनों मौसम में मूँगफली के उत्पादन को प्रभावित करते हैं। हालांकि, इन रोगों की गंभीरता अथवा घटनाएँ मौसम पर आधारित हैं बदल सकती हैं। यह रोग मूँगफली की फली की उपज और चारे की गुणवत्ता को भी कम कर देते हैं।

ग्रीवा विगलन, तना विगलन, एल्फा जड़तथा सूखीज ड़विगलन, बीज एवंअंकुरित बीजो के प्रमुख रोग हैं।यह बीमारीयां रेतीली चिकनी-बलुई मिट्टी में फसल के अंकुरित बीजो की मृत्य दर को बढ़ा देते है, जिसके फलस्वरूप खेत में जगह-जगह पर कम या ज्यादा पौधे दिखाई देते हैं, और साथ ही उपज भी २५-४० प्रतिशत तक कम हो जाती है।

इस फसल में पत्तियों परआनेवाले रोगों में टिक्का (अगेती एवं पछेती) एवं रोली रोग प्रमुख हैं, जो की आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण तथा बहुतायत पाये जाते है।यह रोग उपज मे नुकसान पहुंचाते है, जो की कभी-कभी 70 प्रतिशतत कहो जाता हैअभी हालही के कुछ वर्षो मेंअल्टरनेरिया पत्तीअंगमारी नामक रोग रबी की फसल में खेतो में नुकसान पहुँचाने लगा है। विषाणु जनित रोगों में मूँगफली कलि का ऊतकक्षय, मूँगफली तनाऊतकक्षय, मूँगफली का माँटल तथा मूँगफली का झुरमुट रोग आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है।यह विषाणु जनित रोग फसल की उपज में 60 प्रतिशत तक हानि पहुंचा सकत हैं।

मूँगफली के प्रमुख रोगों को प्रबंधित करन के लिए कई तरह के तरीकेअपनाए जा रहे हैं, जिसमें से मुख्यतयाः, प्रतिरोधी/सहिष्णु किस्में, खेती के प्रमुख तरीके, जैविक-नियंत्रण तथा जरुरत केअनुसार कवकनाशियो का प्रयोग है।

इस लेख में हम मूँगफली वे प्रमुख रोगो को जानने तथा उनके प्रबंध के लिएअपनाए जानेवाले तरीको के बारे में जानकारी लेंगे जो की निम्नलिखित हैं:-

मूँगफली के प्रमुख रोगः-

बीजएवंअंकुरितबीजोकेरोग :-

1. ग्रीवा विगलन 2. एफ्लाजड़ 3.सूखा जड़ विगलन
4. तनाविगलन

पत्तियोंमेंहोनेवालेकवकीयरोग :-

1. टिक्का रोग (अगेती) २. टिक्कारोग (पछेती)
3. रोली 4. अल्टरनेरियापत्तीअंगमारी

विषाणु जनित रोग :-

1. मूँगफलीकलिकाऊतकक्षय 2. मूँगफलीमाँटल
3. मूँगफलीकाझुरमुट 4. मूँगफलीतनाऊतकक्षय

ग्रीवा विगलन(एस्परजीलसनाइजर) :-

वितरणएवंआर्थिकमहत्व

यह मूँगफली पैदा करनेवाले लगभग सभी राज्यों में पाया जाता है,तथा इसके द्वारा किये जानेवाले नुकसान में पौधों की मृत्युदर 28 से 50प्रतिशत तक होती है।

लक्षण

बीज के उगने से पहले ही सड़ जाना, बीजाकुर का सड़ना, बीजाकुर में अंगमारी होना, पूरे पौधे की शीघ्रता सेम्लानी हो जाना या इसकी शाखाओ पर पाए जाने वाले लक्षणों के द्वारा पहचाना जा सकता है।प्रभावित पौधों का ग्रीवा क्षेत्र कटा हुआ एवं गहरे भूरे रंग का हो जाता है।

उत्तरजीविता

मृदा में पाए जाने वाले कवक बीज (निवेश द्रव्य/ संरोप) ही संक्रमण का प्राथमिक स्रोतहै।

जिम्मेदार कारक

यह रोगजनक मृदा की निम्न आद्रता (16 प्रतिशत तक) के प्रति सहिष्णु है तथा यह कवक 31 से 350सेंटीग्रेड में अच्छी तरह से विकसित होता है।

रोग प्रबंधन

- गहरीबुवाई नकरे (२इंचसेअधिकनहीं)
- गेहूंतथा चनेकेसाथफसलचक्रअपनायें
- मोठकेसाथमिश्रितफसललेवें
- नीम या अरंडीकी खल 500 किलोग्राम/हेक्टेयर के हिसाब स मृदामेंडालें
- प्रतिरोधी /सहनशील किस्मो का उपयोग करें,जैसेजे 11, जेसीजी 88, तथा ओजी-52-1
- बीज उपचार के लिए ट्राइकोड मीहरजियानम याट्राइकोडर्माविरिडी१०ग्राम/किलो ग्राम बीज की दर सेबीज शोधन तथा इसका मृदा में अनुप्रयोगअथवा नीम के बीजों का सत् 3-5 प्रतिशत की दर से अथवा कार्बेन्डाजिमपाउडर 1-2 ग्राम/किलोग्रामबीजदरसेयामेंकोज़ेब 2-3 ग्राम/किलोग्रामबीजदरसे बीज शोधन करना चाहिए।

एफ्लाजड़ / पीला कवक(एस्परजिलसफ्लेवस):-

वितरण

यहसभीमूँगफलीपैदाकरनेवालेराज्योंमेंपायाजाताहै।

लक्षण

यह पीला कवक, एस्परजिलसफ्लेवस सामान्यतयः सडे एवं स्वस्थ दोनों ही तरहकी फली के बीजों में पाया जाता है।यह बीजां कुरके निकलने के पश्चात प्रथम बीज पत्रों पर प्रकट होता है।इस बीमारी के द्वारासंक्रमित पौधों का आकार छोटा रह जाता है या अवरुद्ध हो जाता है तथा साथ ही पत्तियों काआकारभी कम हो जाता है, जिनमे पत्तियों की शिराएँ साफ़ हो जाती हैं,एवं पत्रक पर हरिमाहिनता हा जाती है।इस तरह के बीजांकुर मे द्वितीय जड़ प्रणाली नहीं होती है,इस स्थिति को एफ्ला जड़ के नाम से जाना जाता है।अधिकपरिपक्व एवं क्षतिग्रस्त बीजों तथा फलियों परएस्परजिलसकवक की पीली-हरीकालोनियां विकसित हो जाती है।

उत्तरजीविता

मृदा में पाए जानेवाला कवक का बीज (निवेश द्रव्य/ संरोप) ही संक्रमण का प्राथमिक स्रोत है।

जिम्मेदार कारक

यह रोग कारक मृदाकी निम्नआद्रता के प्रति सहिष्णु है,तथा यह कवक२५ से 350सेंटी ग्रेड तापमान के मध्यअच्छी तरह से विकसित होता है।

रोग प्रबंधन

- फसलचक्र अपनाना चाहिए जिस में मूँगफली के साथ अनाज सम्मिलित हो
- अच्छी गुणवत्ता वाले तथा रोगमुक्त बीजों का ही प्रयोग करें
- बीज के छिलके को क्षतिग्रस्त करने से बचें तथा बीज की गहरी बुवाई ना करें
- बीजो का उपचार थाइरमयाकार्बेन्डाजिमसे२-३ग्राम/किलो ग्राम बीज दर से करें

सूखा जड़ विगलन (मेक्रोफोमिनाफेसियोलिना):-

वितरण

इसे कालाविगलन रोग के नाम से भी जाना जाता है। जो की राजस्थान, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेशतथा महाराष्ट्र मे छिट पुट जगहों पर पाया जाता है,इस रोग जनक की वजह से बीजांकुर की मृत्यु दर बहुत बढ़ जाती है, जिससे पौधों की इष्टतम सँख्या में कमी आ जाती है एवं खेत में फसल छितरी हुई प्रतीत होती है।

लक्षण

भूमि सतह से ठीक ऊपर, तने पर पानी से भी गेहूए परिगलित धब्बे नजर आतेहैं।यदि प्रारंभिक संक्रमण की वजह से तने पर गड्ढे हो जात है ता स्क्लेरोशिया (कवक के बीज)के बनने के साथ ही पौधा में म्लानीहोजातीहै।तनेकासंक्रमितभागकटा-फटा हो जाताहै, जोकीकालाऔर सांवले रंग का प्रतीत होता है।जड़, फलीऔरफली आधार भीसड़नेलगतेहैं, तथा स्क्लेरोशिया के द्वारा ढक दिए जाते है एवं संक्रमित बीज काले हा जातेहैं।

उत्तर जीविता

इस रोग की परपोषी परिसर क्षमता भी विस्तृत है।यह रोग कारक वैकल्पिक मृत जीवी है तथा मृदा में ही रहता है,संक्रमित मिट्टी, फसल के अंश एवं संक्रमित फलियां संक्रमण के स्रोत के रूप में कार्य करती है।

जिम्मेदार कारक

नवोद् भिद् पौध के संक्रमण के लिए सही तापमान 29 से 350 सेंटीग्रेड है, फलियों के ऊपर संक्रमण के लिए यह 26 से 320 सेंटीग्रेड तक है। इसके स्क्लेरोशिया फसलों के अवशेषों, मृदा, संक्रमित फलियां, छिलकोंतथा दानों के माध्यम से खेतों मे फ़ैल जाती है ।

रोग प्रबंधन

- फलीऔरदानोकोक्षतिग्रस्तहोनेसेबचानाचाहिए
- पंक्ति से पंक्ति कि दूरी कम(30सेमी.)रखनीचाहिए
- बीजोपचारट्राइकोडर्माहरजियानमयाट्राइकोडर्माविरिडीसे10ग्राम/किलोग्रामबीजदरसेअथवा कार्बेन्डाजिम 2ग्राम/किलोग्रामबीजदरसे अथवा कैप्ताफोल अथवा थाइरमका३ग्राम/किलोग्रामबीजदरसेकरना चाहिए

तना विगलन(स्क्लेरोशियमरोल्फ्सी):-

वितरण

इसरोगकारककी परपोषी परिसर क्षमताविस्तृतहै।मूँगफलीउगानेवालेराज्योंमें यह रोग महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, ओडिसा, एवं तमिलनाडु में बहुत गंभीर रूप से पाया जाता है। इस रोग के प्रमुख केंद्र बिन्दुओ के रूप में लातूर, रायचूर, धारवाड़, जूनागढ़ तथा हनुमानगढ़ को चिन्हित किया गया है।इस रोग के द्वारा27 प्रतिशत या इससे भीअधिक नुकसान आँका गया है इस रोग से मूँगफली के सूखे वजन तथा तेल की मात्रा में कमी को अप्रत्यक्ष नुकसान भी बताया गया है।

उत्तरजीविता

स्क्लेरोशिया भूमि मे चार वर्षो सेअधिकसमयतकजीवितरह सकते है।इसके अलावाइसरोगकीपरपोषी परिसर क्षमताभीअधिक होती है।

लक्षण

लक्षण

प्रारंभिक लक्षणों में मिट्टी के संपक मे आनेवाले तने के भाग एवं शाखाओं की आंशिक या पूर्ण रूप सेम्लानीहोजातीहै। पत्तियाँ भूरे रंग की हो जाती है और म्लानी जैसी प्रतीत होती है अपितु, पत्तियाँ पौधों से जुडी रहती हैं।फली आधार (पेग) तथा फलीकासड़ना एवं पत्तियोंकामुरझाना, यह तना विगलन रोग से संक्रमित पौधो के कुछ लक्षण हैं।

जिम्मेदार कारक

फसलों के अवशेष,40से50प्रतिशत मृदाआद्रता,जलधारणक्षमताके साथदिनकातापमान29-320सेंटीग्रेडएवंरात्रि का25सेंटीग्रेडइसरोगकेपनपने में मदद करते हैं।

रोग प्रबंधन

- फसलकेअवशेष औरसतहपरपड़ेहुएकार्बनिकपदार्थआदि को भूमिमें८-10इंचकीगहराईतकजुताईकरकेदबा देनाचाहिए
- फसलचक्रमेंकपास, गेहू, मक्का, ज्वार, प्याजतथा लहसुनकोशामिलकरनाचाहिए
- सहिष्णु किस्में जैसे डीएच८,आईसी जीवि 86590,ओजी-52–1काप्रयोग करना चाहिए
- ट्राइकोडर्माहरजियानमयाट्राइकोडर्माविरिडी10ग्राम/किलोग्रामबीजदरसेबीजोपचारकरें
- अरंडी यानीमयासरसों कीखलको500किलोग्राम/हेक्टेयरकीदरसेमृदामेंमिलाएअथवा इन खलियों को ट्राइकोडर्माहरजियानमयाट्राइकोडर्माविरिडी से उपचारित(२.५ किलोग्राम/१०० किलोग्राम खल) करकेमृदा में मिलाए
- बीजों को केपटानकी ३ग्राम/किलोग्रामबीजदरसे बीजोपचारकिया जा सकता हैं

अगेती टिक्का रोग (सर्कोस्पोरा अरेचिडीकोला):-

वितरण

अगेती टिक्का रोग मूँगफली उगानेवाले उत्तरी,दक्षिणी और मध्य राज्यों में पाया जाता है। इस रोग सेफसल की उपज में१५ से५९प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है। फलियों और दाने की उपज में नुकसान केअलावा,चारेकीगुणवत्ता परभीप्रतिकूलप्रभावपड़ताहै।

लक्षण

लक्षण

यह रोग साधारण तया बुवाई के३०दिन में दिखाई पड़ता है।प्रारंभिक तौर पर पत्तियों की उपरी सतह पर गोल से अर्धगोलाकारबारीकहरिमाहिन्धब्बेविकसितहोतेहैं,जोकीबादमेंभूरेरंगमेंबदलते जातेहैं,यहधब्बेपीलेरंगकेप्रभामंडलसेघिरेहुएरहतेहै।कवक का बीजाणुकजनन प्रचुरमात्रामेंहोनेकेकारणपत्तियों कीनिचलीसतहसेयहधब्बेगहरेभूरेरंगके दिखाई देते है।गंभीररूपसेसंक्रमितपत्तियाँपूर्णविकाससेपूर्व ही गिरजातीहैं,यहरोगतनेऔरशाखाओतक भी फ़ैलजाताहै।

उत्तरजीविता

रोगकारक कवक प्रभावित फसल के अवशेषों पर,मृदा या मूँगफलीकेसंक्रमितकिस्मोंपर,अलिंगी बीजाणु (कोनिडिया) के माध्यम से जीवित रहती है।यह रोग जनक कुछ स्वतंत्र रूप से उगे हुए मूँगफली के पौधों परभी जीवित रह सकता है।

जिम्मेदार कारक

तापमान25से300सेंटीग्रेड,लम्बेसमयतकपत्तियोंकागीलारहनातथा सापेक्षिकआर्द्रता(>80 प्रतिशत)इसरोगकेसंक्रमणएवं विकासकोबढ़ावादेते हैं।

रोग प्रबंधन

- मूँगफलीकेस्वतंत्ररूपसेउगेहुए (अनिच्छित)पौधोंको नष्ट कर देना चाहिए
- फसलअवशेषोंकोमिट्टीमेंगहराईमें दबा देना चाहिए
- रोगप्रतिरोधोकिस्मेजैसेआईसीजीएस44,एम्335, बीजी 3,आईसीजीएस76,सोमनाथ, सीएसएम्जा84-1औरएम्522 को प्रयोग में लेना चाहिए
- ज्वारयाबाजरेकेसाथमूँगफलीकीअंतःफसल(1:3 या 1:5)लेनी चाहिए
- नीमकी पत्तियों कासत(2-5 प्रतिशत)यानीमकेबीजों का सत्५प्रतिशतअथवा कार्बेन्डाजिम(0.05 प्रतिशत) रमेंकोज़ेब(0.2 प्रतिशत)का मिश्रण 2 से ३ हफ्तों के अंतराल पर पत्तियों पर छिड़कना चाहिए जो की रोग के शुरुआती दौर में2से3 बार तक करना चाहिए,इससे अगेती टिक्का रोग की गंभीरता को प्रभावीरूप से कम किया जा सकता है।

पछेती टिक्कारोग (फ़ेएओसेरिओप्सिस पर्सोनाटा):-

वितरण एवंआर्थिकमहत्व

यहरोगआमतौरपर जहाँ भीमूँगफलीबोईजातीहै,वहाँपर पायाजाताहैऔरउपज मेंयह१५ से 59प्रतिशत तक हानि करता है। फलियों और बीजों की उपज में नुकसान के अलावा, चारे की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

लक्षण

यह रोग सामान्यत: 60दिनकीफसलसे लेकर कटाईतकदेखा जाताहै।प्रारंभमेंपत्तियों की उपरी सतह पर महीन हरिमहीन धब्बे विकसित होते है,बाद में यह अनियमितआकार के गहरे भूरे धब्बों में बदल जाते हैं।उन्ही पत्तियों की निचली सतह पर गहरे भूरे से काले रंग के धब्बे दिखाइ देते है,जो की कवक के प्रचुर मात्रा मेंबीजाणुकजनन की वजह से होतेहै। रोग की गंभीर अवस्था में सारे धब्बे आपस में जुड़ जाते है,जिससे पत्तियाँ परिपक्व होने से पूर्व ही झड़ जाती है। तना तथा शाखा ओपर भी आयताकारधब्बे पाएजातेहैं।।

उत्तरजीविता

अगेती टिक्कारोगकेरोगकारककीभांतिहीपछेतीटिक्कारोग का रोगकारकभी अलिंगी बीजाणु(कोनिडिया)के रूप में उत्तर जीवित रहता है,जो की भूमि मेंसंक्रमितफसलकेअवशेषोंयासंक्रमितमूँगफलीकेछिलकेमेंएवंस्वत: उगजानेवालेमूँगफलीकेपौधोंपररहताहै।

जिम्मेदार कारक

तापमान25-300 सेंटाग्रेड वे बीच, पत्तो का लम्बे समय तक नमरहनाऔरउच्चसापेक्षिकआर्द्रता(80प्रतिशत)इसरोगकेपक्षमेंहै।

रोग प्रबंधन

- स्वयं: उगगएमूँगफलीकेपौधोंकोनष्टकरना चाहिए
- फसलअवशेषोंकोमिट्टीमें गहराईमेंदबाना चाहिए
- प्रतिरोधी/सहनशीलकिस्मोंजैसेगिरनार1, आरजी141, आईसीजीएस1,आईसीजीवि 87160,आईसीजीवि86590, आईसीजीवि 86325, टीऐजी 24,के 134, डीआरजी 17,आर 8808,कादिरी4,ऐएलआर1,ऐ एल आर 2,ऐ एल आर 3,बीएसआर1,ओजी-52-1,सीओ3,सी ओ 4,विआरआई335,सीएसएम्जा84–1, 884, एम-335 एवं बी जी 3 को प्रयोग में लेना चाहिए
- ज्वारयाबाजरेकेसाथमूँगफलीकीअंत: फसल(1:3)लेना चाहिए
- नीमकीपत्तियोंकेजलीयसत(2-5 प्रतिशत)कापत्तियों परछिड़कावयानीमकेबीजोंकासत(५ प्रतिशत) याकार्बेन्डाजिम(0.05प्रतिशत) रमेंकोज़ेब(0.2प्रतिशत) का मिश्रण2-3सप्ताहकेअन्तरालपरदो सेतीनबाररोगकेप्रारंभहोनेकेसमयछिड़काव करने पर यह पछे तीटिक्का रोग की गंभीरताकोप्रभावीरूपसेकमकरदेताहै।

रोली(पक्सिनियाअरैकिडीस):-

वितरण एवंआर्थिकमहत्व

यहरोगमूँगफलीउगानेवालेसभी क्षेत्रोंमेंपायाजाताहै, परन्तुइसकी गंभीरतादक्षिणीराज्योंमेंअधिकतम पायी जाती है।रोली केद्वाराउपजमेंनुकसानकी सीमा 10 से 52 प्रतिशत तक आंकी गई है। यह रोग उपज मे नुकसान के साथहीबीजोंकेआकारतथातेलकीमात्राकोभीघटादेताहै।

लक्षण

प्रारंभिकतौरपरपत्तियों कीऊपरीसतहपरहरिमाहीनधब्बेबननेलगतेहैं, जबकि उसी पत्ती कीनिचलीसतहपरनारंगीरंगकेउभरेहुएधब्बे (युरिडोबिजाणु) दिखतेहैं।गंभीररूपसेसंक्रमितपत्तियाँपरिगलितएवं सूखने लग जाती हैं,परंतु पौधे से जुडी रहती है।रोग ग्रसित पौधों से दान भी छोटेऔर सिकुड़ेहुएबनतेहैं।

उत्तरजीविता

युरिडोबिजाणुकेरूपमेंएवं मूँगफलीकेस्वत: उगेहुएपौधे, रोलीरोगके संक्रमण में सहायक होते हैं।

जिम्मेदार कारक

तापमान 200सेंटीग्रेड, पत्तियों का लम्बे समय तक न मरहना एवं उच्चआर्द्रता,यहतीनोकारकरोलीरोगकोफैलानेएवं उपजने मे मदद करतेहैं। हवाकाप्रवाह, बरसातकीबूँदेंएवंकीड़ेभीइसरोगकोएकफसलसे दूसरी फसल में फैलानेमेंमददकरते हैं

रोग प्रबंधन

- मूँगफलीमेंस्वत: उगेहुएपौधोंकोनष्टकरना चाहिए
- समय से पूर्व बुवाई (जूनकापहलापखवाडा) करके भीइसरोगसेबचाजासकताहै
- बाजरायाज्वारकेसाथअंत: फसल (1:3)
- रोगरोधी/सहनशीलकिस्मेंजैसेगिरनार1, आईसीजीवि 87160,आईसीजीवि 86590, आईसीजीवि86325, डीआरजी 12, टीऐजी 24, ऐएलआर1, ऐएलआर2, ऐएलआर 3, बीएसआर 1, ओजी-52-1, विआरआई 5, सीओ 4, सीएसएम्जी 84-1, आईसीजीएस 5 तथा डीआरजी 17
- नीमकीपत्तियों कासत (2-5 प्रतिशत) अथवा नीमकेबीजोंकासत 5 प्रतिशतयामंकोज़ेब/ कार्बेन्डाजिमका 0.3 प्रतिशतकीदरसेयाट्राईदिमेफॉन 250 ग्राम/ हेक्टेयरकी दर से पत्तियो पर छिड़काव करने से इस रोग की गंभीरता कम होती है।

अल्टरनेरियापत्ती अंगमारी(अल्टरनेरियाटेनुइस्सिम)

वितरण एवं आर्थिक महत्व

पिछलेकुछ वर्षोंमें, यहरोगरबीमूँगफलीमें गंभीररूपसेदेखा जा रहाहै।यहरोगफलियोंकि उपज को 22 प्रतिशततकतथाचारेकीउपज को 63 प्रतिशततक कमकरदेताहै, हालांकि यहरोग कीगंभीरतापरनिर्भरकरताहैं इस रोग के प्रभाव से चारेकीगुणवत्तापरभीबुराअसरपड़ताहै।

लक्षण

प्रारंभमेंपत्तियों के उपरी भाग से जलनप्रारंभ होताहै, जोकीहलकेहरेभूरेरंगके 'वी' ('V') आकार के धब्बे में परिवर्तित होजातीहैं, तत्पश्चात यह रोग पत्तियों के बीच तक फ़ैल जाता है तथा पूरी पत्ती जली हुई दिखाई देती हैं संक्रमण अवस्था में जली हुई पत्तियाँ अंदर की तरफ मुड जाती है एवं भंगुर हो जाती है।

उत्तर जीविता

पौधेप्राथमिकनिवेश द्रव्य/ संरोपकाकामकरतेहैंएवंद्वितीयकप्रसारअलिंगी बीजाणुओं(कोनिडिया)द्वाराहोताहै।

जिम्मेदार कारक

तापमान 200सेंटीग्रेडसेअधिक, लम्बेसमयतकपत्तियों पर नमी का रहनाएवं उच्चआर्द्रतारोगकोबढ़ावादेतीहै, हवामेंप्रवाह तथा कीड़ोंकेद्वारा भीयहरोगफसलमेंप्रसारितहोताहै।

रोग प्रबंधन

- अधिक प्रभावित क्षेत्रों में रोगकेप्रतिअतिसंवेदनशीलकिस्मेंजैसे टीजी37,टीपीजी41एवंजेएल42प्रयोग में नहीं लेनी चाहिएं
- नीमकीपत्तियोंकासत(2-5 प्रतिशत)या नीमकेबीजोकासत 5 प्रतिशतयाकार्बेन्डाजिम(0.05प्रतिशत) + मेंकोज़ेब(0.2प्रतिशत)केमिश्रण कापर्णीयछिड़कावकरनेसेइसरोगकीगंभीरताकोकमकियाजासकताहै।

मूँगफलीकलिकाऊतकक्षय (मूँगफलीकलिकाऊतकक्षयविषाणु):-

वितरण एवं आर्थिक महत्व

व्यापकरूपसेवितरित,जगतियाल, हैदराबाद, लातूर, टीकमगढ़, रायचूरऔरमैनपुरीइसकेप्रमुखचिन्हितस्थानहै।यहबीमारी ३०-९० प्रतिशततकउपजमेंनुकसानकरतीहै।

लक्षण

इसरोगकाविशिष्टलक्षण,कक्षीयप्ररोहका प्रचुरोद्भवनएवं पत्तियोंकागंभीररूपसेविकृतहोजानाहै।अंतस्थतथा कक्षीयकलियोंकाऊतकक्षय भी होता है।

उत्तरजीविता

इसरोगज़नक़कीपरपोषी परिसर क्षमता भी विस्तृतहैतथा यहअलंकृतपौधों (जिन्निया, कोसमोसएवं सूरजमुखी), खरपंतवारो में(जंगली पुदीना: एजरतम कोनिजोइदेस;चरोता: केसिआ तोरा; काँटा गोखरू:अकेनथोसपरमम हिसपिदियम; कुदालिया:देस्मोडियम ट्राईफोलियम) एवं फसलपौधोंमें (टमाटर, बैंगन, मूंग, उडद, सेम औरमटर) परजीवितरहताहैं।

जिम्मेदार कारक

तापमान 300सेंटीग्रेडऔरहवाकीगति 10 किलोमीटर/घंटाथ्रिप्स (काष्ठकीट)केप्रवासकोबढाताहै।थ्रिप्सकीजनसंख्याअगस्त के अंतमेंतथा सितंबरमेंबहुततेजीसेबढ़तीहैंजनसंख्याफिरसेजनवरीएवंफरवरीमें बढती हैऔरइसी लिएरबीमौसमकीफसलको भीगंभीररूपसेनुकसानपहुचताहै।

रोग प्रबंधन

- रोगसहिष्णुकिस्मेंजैसेकादिरी ३, आई सी जी एस 11, आई सी जी एस 44, आर जी 141, आई सी जी एस (एफ डी आर एस) 10, आई सी जी एस 37, टी ए जी 24, के 134, डी आर जी १२, आर 8808, कादिरी 4, बी एस आर १, जे सी जी 88, ए एल आर 3, सी ओ 3, आई सी जी एस ५, बी ए यु १३, बी ९५, आई सी जी वी 86325, डी आर जी 17 औरसीडीएम जी 884 प्रयोग में लेना
- मध्यभारतमेंजल्दी (मध्यसेजूनकेअंतमें) तथा उत्तरभारतमेंदेरसेबुवाई (जुलाईमें) करने से रोग से बचा जा सकता हैं
- फसल को करीब 20-22.5 x 7.5-10 सेमी अंतराल पर बोना चाहिए
- बाजरा/ज्वार/मक्काकोमूँगफलीकेसाथ अंत: फसल (1:3)लेनाचाहिएजिससेकी थ्रिप्सकाआवागमनफसलमेंकमहोताहै।

मूँगफलीमाँटल(कर्बुर/चितकबरा) (मूँगफलीमाँटलविषाणु):-

वितरण एवं आर्थिक महत्व

यहरोगमुख्यतया आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात में पायाजाताहै। इस रोग से फसलकीउपज में 30 प्रतिशततकनुकसानहोसकताहै।

लक्षण

नईपत्तियोंपरअनियमितआकार के गहरेहरेरंगके बड़े-बड़े धब्बेबनते है।हल्केकर्बुरलक्षणपारेषित प्रकाशमेंसाफ़दिखाईदेतेहैं।शिराओकेबीच मेंदबावतथा पत्तियों केसिरोंकाऊपरकीतरफमुड़ना,इसरोगकेप्रमुखलक्षणहै।संक्रमितपौधों में फलियाँभी कम लगती है जिनकाआकार भीछोटाहोता है।

उत्तरजीविता

यहविषाणुबीजजनितहै,द्वितीयकप्रसारऐफिड (माहू) प्रजातियोंसेहोताहै।यहरोगज़नक़कईमहत्वपूर्णफलीवालेफसलोंमें (जैसे मूँगफली, सोयाबीन) तथा खरपतवारो (चकुंडा: केसिया ओब्तुसिफोलिया; बड़ा चकुंडा:सी. लेप्तोकार्पी;कसुन्दा/बड़ी कसोंदी: सी. ओच्सिदेंतालिसएवं पार्ष्णीपर्णी/जंगली गांजा:देस्मोदियमकानुम) मेंजीवितरहसकताहै।

जिम्मेदार कारक

प्राथमिकनिवेश द्रव्य/ संरोपस्रोतबीजकेमाध्यमसेएवंद्वितीयकप्रसारएफिड्स (माहू) केद्वाराहोताहै।लंबेसमयतकसूखेकारहनाभीमाहू कीजनसँख्याकोबढ़नेमेंमददकरताहैं।

रोग प्रबंधन

- रोगसेसंक्रमित बीजोकोनहींबोनाचाहिए
- सख्त संगरोध नियमोंका पालनकरनाचाहिए
- रोगवाहक या वेक्टर (ऐफिड) की जनसंख्या परनियंत्रण रखना
- ऐफिड्सकोआकर्षितकरनेवाले(लोबिया) फसलों(पाश शस्य) कोलगाना
- रोग एवं रोगवाहक रोधी फसलो कोउगाना
- मूँगफली की बुवाईकीतारीख कोआगे-पीछेकरके (जहासंभव हो) भीऐफिड्सके संचरण कोरोकाजासकताहै
- पूर्ण खरपतवारनियंत्रित फसल, इस रोग से मुक्ति दिला सकता हैं

मूँगफलीझुरमुट/गुच्छन (मूँगफलीझुरमुटविषाणु)

वितरण एवं आर्थिक महत्व

यहरोगराजस्थान, पंजाब, गुजरात, आंध्रप्रदेशएवं उत्तरप्रदेशमेंज्यादापायाजाताहै, इन प्रदेशों में मूंगफली कि फसल रेतीलीमिट्टीमेंलीजातीहै।देरसेसंक्रमितपौधोंमें ६० प्रतिशततक हो सकता हैं

लक्षण

नईपत्तियोंपर चितकबरे धब्बे तथा हरिमाहीनवलयदिखाई देते हैं। पुरानीपत्तियोंमेंगहरेहरेरंगकीरंगउड़ेहुएचितकबरे धब्बेदिखतेहैं।शीघ संक्रमितपौधेगंभीररूपसेअविकसितएवं गहरेहरेरंगकेरहजातेहैं।

उत्तरजीविताएवंजिम्मेदार कारक यहविषाणुपोलिमिक्साग्रेमिनिसनामकफंफूदतथा संभवतः मृदासूत्रकृमिमेंजीवितरहताहै एवंइन्हीकेद्वाराप्रसारितहोताहै। मूँगफली के अलावा यह विषाणु गेहूँ, एवं कई सारे दूसरे खरपतवारों को भी संक्रमित करता है। इस विषाणु का प्रसार बीजों के द्वारा कम से कम होता है।

रोग प्रबंधन

- रोगमुक्तबीजकीबुवाई खरपतवारमुक्तकृषि
- मृदाकासौरीकरण (सोलेराईजेशन) बाजरेकेसाथफसलचक्र
- नेमागोनएवं टेमीककाबुवाईसेएकसप्ताहपहलेमृदामेंउपयोगकरना

उपरोक्तसभीइसरोगकेप्रबंधनकेलिएप्रभावीरणनीतियांहैं।

मूँगफलीकातनाऊतकक्षय (मूँगफलीकातनाऊतकक्षयविषाणु)

वितरण एवं आर्थिक महत्व

यहरोगआंध्रप्रदेशकेअनंतपुरजिलेमेंबहुतायतपायाजाताहै,साथहीइससेसटेहुएकुछजिलोंमेंजैसे कुडप्पा, कुरनूल,चित्तूरएवंकर्नाटककेरायचूरमेंभीपाया जाता है।

लक्षण

इसरोगकेविशिष्टलक्षणतनेतथा अंतस्थपत्तियोंकाऊतकक्षयहोना है,ततपश्चातपौधेकीमृत्युहोजाना है।

उत्तरजीविता एवंजिम्मेदार कारक

इसविषाणुतथा इसकेवाहक (थ्रिप्स) कीपरपोषी परिसर क्षमता भी (गाजर घास, लोबिया, उड़द, औरगेंदा) विस्तृतहै।

रोग प्रबंधन

- मूँगफलीकीएकल कृषिकोरोकना खरपतवारनियंत्रण
- पौधोंकीइष्टतमसंख्याकोबनाएरखना
- अरहरएवं बाजरायाअरहरएवं एरंडीकेसाथमूँगफलीकीअंत: फसललेना
- स्थानिक रोगवाले क्षेत्रो मे ज्वार, बाजरा, मक्का, अरंडी, तिलकोमूँगफलीकेसाथ वैकल्पिक फसल के रूप मे तीन साल मे एक बार उगाना

निष्कर्ष

मूँगफलीव्यापक रूप से दुनियाभर में उगाई जाने वाली एकप्रमुखतिलहनफसलहै,जो की प्रोटीनका एक महत्वपूर्ण स्रोतहैं इसमें होने वाले रोगहर वर्ष मूँगफलीकाउत्पादनकरने के लिएएकबड़ाखतरा है, तथा मूँगफलीमेंरोगों की रोकथाम उत्पादकों के लिएएकप्रमुख चिंताजनक विषयहैं सभी रोगों में मृदाजनित रोगविशेष रूप से जटिल होने की वजह से इनका प्रबंधन कठिन है, क्योंकि सामान्यतयः इन तक कवकनाशी नहीं पहुँच पाते हैं तथा रासायनिक नियंत्रण बहुत प्रभावी नहीं होने के साथ ही पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचा रहे हैं ऐसी स्थिति में समेकित रोग प्रबंधन एक मात्र उपाय है जिसके माध्यम से रोगों से मुक्ति पाई जा सकती हैं एकीकृत रोग प्रबंधन में आजकल, विशेषकर मृदाजनित रोगों के लिए जैविक नियंत्रण का प्रयोग जिसमे सूडोमोनस, राइजोबियम, बैसिलस आदि जीवाणु एवं ट्राइकोडर्मा आदि कवकों का इस्तेमाल किया जा रहा हैं

अ. पत्तियोंमेंहोनेवालेकवकीयरोग

कवकीय रोग से ग्रसित मूँगफली की फसल

टिक्का रोग (अगेती) टिक्का रोग (पछेती) अल्टरनेरियापत्तीअंगमारी रोली रोग

ब. बीजएवंअंकुरितबीजोकेरोग

एफ्लाजड़ ग्रीवा विगलन

सूखा जड़ विगलन

तनाविगलन

स. विषाणुजनितरोग, मूँगफलीकलिकाऊतकक्षय

रोहू मछली

रोहू (वैज्ञानिक नाम - Labeo rohita) पृष्ठवंशी हड्डीयुक्त मछली है जो ताजे मीठे जल में पाई जाती है। इसका शरीर नाव के आकार का होता है जिससे इसे जल में तैरने में आसानी होती है। इसके शरीर में दो तरह के मीन-पक्ष पाये जाते हैं, जिसमें कुछ जोड़े में होते हैं तथा कुछ अकेले होते हैं। इनके मीन पक्षों के नाम पेक्टोरेल फिन, पेल्विक फिन, (जोड़े में), पृष्ठ फिन, एनलपख तथा पुच्छ पंख (एकल) हैं। इनका शरीर साइक्लोइड शल्कों से ढँका रहता है लेकिन सिर पर शल्क नहीं होते हैं। सिर के पिछले भाग के दोंनो तरफ गलफड़ होते हें जो ढक्कन या अपरकुलम द्वारा ढके रहते हैं। गलफड़ों में गिल्स स्थित होते हैं जो इसका श्वसन अंग हैं। ढक्कन के पीछे से पूँछ तक एक स्पष्ट पार्श्वीय रेखा होती है। पीठ के तरफ का हिस्सा काला या हरा होता है और पेट की तरफ का सफेद। इसका सिर तिकोना होता है तथा सिर के नीचे मुँह होता है। इसका अंतः कंकाल हड्डियों का बना होता है। आहारनाल के ऊपर वाताशय अवस्थित रहता है। यह तैरने तथा श्वसन में सहायता करता है।

भोजन के रूप में इसका विशेष महत्व है। भारत में उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा असम के अतिरिक्त थाइलैंड, पाकिस्तान और बांग्लादेश के निवासियों में यह सर्वाधिक स्वादिष्ट व्यंजनों में से एक समझी जाती है। उडि़या और बंगाली भोजन में इसके अंडों को तलकर भोजन के प्रारंभ में परोसा जाता है तथा परवल में भरकर स्वादिष्ट व्यंजन पोटोलेर दोलमा तैयार किया जाता है, जो अतिथिसत्कार का एक विशेष अंग हैं। बंगाल में इससे अनेक व्यंजन बनाए जाते हैं। इसे सरसों के तेल में तल कर परोसा जाता है, कलिया बनाया जाता है जिसमें इसे सुगंधित गाढ़े शोरबे में पकाते हैं तथा इमली और सरसों की चटपटी चटनी के साथ भी इसे पकाया जाता है। पंजाब के लाहौरी व्यंजनों में इसे पकौड़े की तरह तल कर विशेष रूप से तैयार किया जाता है। इसी प्रकार उड़ीसा के व्यंजन माचा-भाजी में रोहू मछली का विशेष महत्व है। ईराक में भी यह मछली भोजन के रूप में बहुत पसंद की जाती है। रोहू मछली शाकाहारी होती है तथा तेज़ी से बढ़ती है इस कारण इसे भारत में मत्स्य उत्पादन के लिए तीन सर्वश्रेष्ठ मछलियोंडक. में से एक माना गया है।

अक्तूबर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- इस माह से सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है, अतः पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- सर्दी के मौसम में अधिकतर भैंस ताव में आती है, अतः भैंस के ताव में आने पर समय से गाभिन करवायें।
- भैंस को मुर्राह नस्ल के झोटे से या नजदीक के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र से ही गाभिन करवायें।
- भैस ब्यांने के 60–70 दिनों तक ताव में नहीं आये तो नदजीक के पशु–चिकित्सक से जाँच करवायें।
- भैंस व गाय को समय से ताव में लाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।
- पशुओं को बाह्यय परजीवी से बचाव के लिए पशु–चिकित्सक की सलाह से दवाई का छिड़काव नियमत करें।
- अधिक चारा लेने के लिए बरसीम फसल की उन्नत किस्में BL-10, BL-22 व BL-42 की बिजाई इस माह अवश्य कर लें।
- जई फसल से अधिक चारा लेने के लिए उन्नत किस्में OS-6, OL-9 या कैन्ट की बिजाई माह के मध्य से शुरु करें।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

पशुओं में खनिज लवण का महत्व

डॉ0 आर.एस. राठौड़, डॉ0 दयानन्द, डॉ0 एस.एम. मेहता,डॉ0 आर.के.वर्मा

कृषि विज्ञान केन्द्र, आबूसर–झुन्झुनूं

जिस प्रकार मनुष्य के स्वास्थ्य तथा शरीर पोषण के लिए खनिज तत्वों की आवश्यकता है और इसके लिए मनुष्य विभिन्न प्रकार की सब्जियां, दालें, अनाज, दूध, फल आदि खाकर पूर्ति करता है, उसी प्रकार पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए, उनकी उत्पादन क्षमता बनाये रखने तथा विभिन्न रोगों से बचाने के लिए सन्तुलित रूप से खनिज तत्व दिया जाना जरूरी है। खनिज तत्व हालांकि कम मात्रा में ही आवश्यक है लेकिन इसकी पूर्ति भी अति आवश्यक है। पशु आहार में एक या अनेक तत्वों के भोजन में असन्तुलन से न केवल विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं बल्कि पशु की उत्पादन क्षमता भी कम हो जाती है।

खनिज तत्वों को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है :–

1. मुख्य खनिज तत्व :– कैल्शियम, फॉस्फोरस, सोडियम, पोटेशियम, मैग्निशियम, सल्फर तथा क्लोरिन मुख्य खनिज तत्व हैं जो पशु को अधिक मात्रा में चाहिए तथा विभिन्न क्रियाओं के लिए अत्यन्त आवश्यक है।
2. सूक्ष्म खनिज तत्व :– लोहा, ताम्बा, जस्ता, कोबाल्ट, आयोडिन, मैगनीज, क्रोमियम, सिलिकान तथा वेन्डियम। ये खनिज लवण मुख्य खनिज तत्वों से कम मात्रा में आवश्यक होते हैं।
3. जहरीले खनिज तत्व :– ये खनिज तत्व पशु आहार में आवश्यक है लेकिन आवश्यकता से अधिक मात्रा में पूर्ति होने पर जहरीले हो जाते हैं जैस लोरिन, सैलेनियम तथा मोलिब्डेनम।

पशुओं के शरीर में पाये जाने वाले खनिज तत्वों में तीन–चौथाई हिस्सा केवल कैल्शिम व फॉस्फोरस तत्व का होता है (49 प्रतिशत कैल्शियम, 27 प्रतिशत फॉस्फोरस तथा 24 प्रतिशत अन्य तत्व) कैल्शिम की कमी से छोटे बड़े पशुओं में ऑस्टामलैशिया नामक बीमारी हो जाती है। हड्डियों की मजबूती तथा दांतों को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए कैल्शिम फॉस्फोरस का पशु आहार में सही अनुपात में होना आवश्यक है। छोटे बछड़ों में हड्डियां बनाने के साथ–साथ दांतों तथा दैनिक बढ़वार में कैल्शिम फॉस्फोरस का महत्वपूर्ण योगदान है। ताजा ब्यायी हुई गायों में कैल्शिम की कमी से मिल्क फिवर नामक बीमारी हो जाती है जिससे दूध उत्पादन घट जाता है। अतः ताजा ब्यायी हुई गायें, गर्भवती गायें तथा बढ़ते हुए बछड़ों को अलग से कैल्शिम व फॉस्फोरस देने की आवश्यकता होती है।

मुर्गियों में कैल्शिम की कमी से पतली पर्त के अंडे पैदा होते हैं। दूध में कैल्शियम और फॉस्फोरस दोनों ही प्रचुर मात्रा में होते हैं लेकिन मैग्निशियम, लोहे तथा तांबे की कमी पायी जाती है। ऐसे बछड़े जो अधिक समय तक केवल दूध पर रखे जाते हैं उनमें

मेग्निशियम लोहे तथा तांबे की कमी हो जाती है। खून की बीमारियां लोहा, तांबा व कोबाल्ट की कमी के कारण होती है। आयोडीन की कमी से पशु में गलगंठ रोग तथा मादा पशु मरे हुए बच्चे पैदा करती हैं।

फॉस्फोरस की कमी से पशु को भूख कम लगती है तथा पशु लकड़ी, मिट्टी, कपड़े, गंदगी आदि खाना शुरू कर देता है। फॉस्फोरस की अधिक कमी से पशु के जोड़ों में दर्द एवं मांसपेशियां कमजोर हो जाती हैं। सोडियम और पोटेशियम पशु के शारीरिक भागों में जल का समुचित वितरण करते हैं। पोटेशियम पशु आहार से समुचित मात्रा में उपलब्ध हो जाता है। सोडियम की आवश्यकता खाने वाले नमक से पूरी कर सकते हैं। खाने वाला साधारण नमक न केवल स्वाद के लिए आवश्यक है बल्कि भूख भी बढ़ाता है। कभी–कभी पूरी मात्रा में दाना हरा चारा आदि खिलाने के बावजूद पशुओं की शारीरिक वृद्धि व उत्पादन क्षमता आदि में कमी आ जाती है। यह समस्या एक या अनेक लवणों की कमी या अधिकता के कारण आती है। चावल की पराली (पुआल) पशु को लगातार खिलाने से देगनाला नामक बीमारी हो जाती है क्योंकि इसमें सैलेनियम की मात्रा अधिक होती है।

अतः पशु पालकों को सुझाव है कि वे खनिज लवणों की पूर्ति करने के लिए पशु आहार के साथ 1.5 से 2 किलो खनिज लवण तथा 1 किलो साधारण नमक प्रति 100 किलो दाने (बांटा) में अवश्य मिलायें बाजार में दवाईयों की दुकान पर मिल्कमिन, न्यूट्रीमिल्क, माइनल फोर्ट, एग्रीमिन, लेक्टोबून आदि नाम से खनिज लवण मिलते हैं। खनिज लवण की ईंटें भी बाजार में मिलती हैं जो पशु की नांद (ठांण) में डाल देते हैं ताकि पशु आवश्यकतानुसार ये ईंट चाटकर खनिज लवणों की पूर्ति कर सके।

खनिज लवण घर पर तैयार करने की विधि

क्र.सं.	आवश्यक घटक	मात्रा 10 किलोग्राम खनिज लवण बनाने हेतु
1.	डाईकैल्शियम फॉस्फेट	5.500 किलोग्राम
2.	नमक आयोडीन युक्त	3.000 किलोग्राम
3.	कैल्शियम कार्बोनेट	1.100 किलोग्राम
4.	मैग्नीशियम कार्बोनेट	0.300 किलोग्राम
5.	फैरस सल्फेट	0.050 किलोग्राम
6.	कॉपर सल्फेट	0.007 किलोग्राम
7.	मैग्नीज डाइआक्साइड	0.007 किलोग्राम
8.	कॉबाल्ट क्लोराइड	0.005 किलोग्राम
9.	जिंक सल्फेट	0.025 किलोग्राम

बनाने की विधि : सभी घटक व्यवसायिक ग्रेड के लेने है। क्र. सं. 4 से 9 तक के सभी घटक क्र.सं. 3 के घटक में अच्छी तरह से मिला लेवें। इसके बाद क्र.सं. 1 व 2 के घटक में अच्छी तरह से मिलाकर पैकिंग कर लेना चाहिये।

मात्रा : बड़े पशु–गाय, भैंस–35 से 40 ग्राम/ दिन
छोटे पशु–भेड़, बकरी –15 ग्राम/दिन
बछड़ा, पाडा –15 से 20 ग्राम /दिन

यूरिया मोलासिस खनिज ईंट घर पर तैयार करने की विधि

क्र.सं.	घटक	मात्रा प्रतिशत
1.	मोलासिस	38.00 प्रतिशत
2.	यूरिया	10.00 प्रतिशत
3.	सिमेन्ट	10.00 प्रतिशत
4.	गेंहूं का चापड़	40.00 प्रतिशत
5.	नमक आयोडिन युक्त	01.00 प्रतिशत
6.	खनिज लवण	01.00 प्रतिशत

विधि : यूरिया, नमक, खनिज लवण तथा सिमेंट को टब में डालकर पानी में मिलाकर लकड़ी के डण्डे से घोल लेवें। पानी की मात्रा सीमेंट की मात्रा का एक तिहाई लेते हैं। इसके बाद इसमें मोलासिस अच्छी तरह से मिला लेते हैं अन्त में गेंहूं का चापड़ इस घोल में डालकर मिला लेते है।

अब इस मिक्सर को 9''ग 6''ग 6'' के लकड़ी के सांचे में भरकर छोड़ देते हैं। जब यह ठोस ईंट का रूप ले लेता है, तब इसे निकालकर पॉलिथिन में लपेट कर रख देते हैं। एक ईंट का वजन 3 किलोग्राम होता है।

मात्रा : ईंट को पशुओं के ठाण (नांद) में तासले में डालकर रख देवें। पशु अपनी ईच्छानुसार 300–500 ग्राम प्रतिदिन ईंट चाट लेता है।

सावधानी : ईंट घोलकर या बांटे के साथ मिलाकर पशु को नहीं देनी चाहिये। सिर्फ पशु को चटानी चाहिये।

मुर्गी पालन में कवक जनित रोगों के निवारण के उपाय

राकेश चौधरी और जोधराज जाट'

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविघालय, हिंसार (हरियाणा) – 125004

'श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर, जयपुर (राज0) – 303329

गत तीन दशकों के दौरान अपने देश में कुक्कुट पालन के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव आये हैं। इस दौरान मुर्गीपालन घर के पिछवाडे से चलकर एक लाभदायक उधोग का रूप ले चुका हैं। आज मुर्गियों की उत्पादन क्षमता लगभग 310 अंडा प्रतिवर्ष तथा छः सप्ताह में ब्रायलरों का शारीरिक भार लगभग 2 कि0ग्रा0 तक पहुंच चुका हैं। इनके परिणाम स्वरूप भारत विश्व में अंडा उत्पादन के क्षेत्र में चौथा तथा ब्रायलर उत्पादन में पांचवां स्थान बना चुका हैं। मुर्गी पालन व्यवसाय पर किये गये कुल व्यय का लगभग 65–75 प्रतिशत भाग उनकी आहार व्यवस्था पर खर्च होता हैं।

कुक्कुट पालकों को अपनी मुगियों से अधिक अंडे व मांस उत्पादन प्राप्त करने के लिये उन्हें सस्ता एवं संतुलित आहार देना अति आवश्यक हो जाता हैं। लेकिन व्यावसायिक कुक्कुट पालन के क्षेत्र में कुछ समस्यायें भी पैदा हो रही हैं जैसे नयी बीमारियों का प्रकोप, सस्ते एवं पौष्टिक खाध्य पदार्थों की अनुपलब्धता , खाध पदार्थों में फफूंद का संक्रमण इत्यादि। कुक्कुट व्यवसाय में कवक जनित रोग की समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बन चुकी हैं। कवकों की लगभग 300 से ज्यादा प्रजातियां कुक्कुट आहार में मिलाये जाने वाले विभिन्न खाध पदार्थो को सवंमित करने के लिये जिम्मेदार होते हैं। विश्व में फसल उत्पादन का लगभग 25–25 प्रतिशत भाग इन कवकों का सवंमित हो जाता हैं।

ऐसे संक्रमित खाध पदार्थों से बने कुक्कुट आहार या फफूंद सवंमित मिश्रित कुक्कुट आहार मुर्गियों को खिलाने पर मुर्गियों की शारीरिक बढवार घट जाती हैं, अंडे का उत्पादन कम हो जाता हैं, आहार भक्षण में कमी आती हैं तथा आहार रूपांतरण दक्षता प्रभावित होती हैं। अंडे की गुणवत्ता में कमी आती हैं। मुर्गियों में लंगडेपन के लक्षण प्रकट हो सकते हैं तथा शरीर की रोगरोधी क्षमता कम हो जाती हैं। इन विकृतियों के कारण अंडे व मांस उत्पादन पर बुरा असर पडता है। साथ ही साथ मुर्गियों में अस्वस्थता एवं मृत्युदर भी बढ जाती हैं। इसलिये कुक्कुटों में कवकों से होने वाली हानियों तथा उनसे बचाव का ज्ञान बहुपयोगी कुक्कुट पालन के लिये लाभदायक होगा।

कवक जनित रोग क्या हैं

विघटित कार्बनिक अवशेषों पर उगने वाले सैप्रोफाइटी कवकों की कई प्रजातियों से अनाज और अन्य खाधों के संक्रमण से अनेक अपघटन के साथ साथ कवकों द्वारा विषाक्त पदार्थ भी उत्पन्न किये जाते हैं, जिन्हें कवक जन्य विष कहते हैं। ऐसा तब होता हैं जब भंडारित खाधों में नमी की मात्रा 12 प्रतिशत से अधिक होती हैं। कवकों से प्रदूषित अनाज में उर्जा तथा प्रोटीन की मात्रा कम हो जाती हैं। इस प्रकार के कवक प्रदूषित खाघ पदार्थों से बना कुक्कुट आहार मुर्गियों को खिलाने पर मुर्गियों में आहार खपत कम होना शरीर बढवार का रूकना, आहार रूपांतरण दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव, अंडे का उत्पादन कम होना, लंगडापन एवं कमजोरी इत्यादि लक्षण देखने को मिलते हैं। इसे हम कवक जनित रोग या माइकोटॉक्सिकोसिस कहते हैं। इसमे मुर्गियां एक या एक से अधिक कवक जनित विष से प्रभावित होती हैं। अफ्लाटाक्सिन, बोमिटाक्सिन, जिरेलीनोन, अकराटाक्सिन, सिट्रीनिन और टी–2 टाक्सिन इत्यादि ऐसे प्रमुख कवक जनित विषय हैं, जिनके कुक्कुट आहार में अकेले या मिश्रित रूप से रहने पर कुक्कुटों के उत्पादन एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर पडता हैं। कवक जनित विष के प्रभाव को सहन करने की शक्ति विभिन्न कुक्कुट प्रजातियों में भिन्न भिन्न होती हैं। बतख तथा टर्की में कवक जनित विष की सहन शक्ति अत्यंत कम होती हैं,। गिनी फाउल, मुगी, एवं बटेर में इस विषय की सहन शक्ति बतख तथा टर्की से जयादा होती हैं।

कवक वर्धन को प्रभावित करने वाले कारक

आहार में कवकों की वृद्धि कई कारणों से होती हैं। इनमें से मृदा की किस्में, खेती करने की पद्वति, सस्यों की प्रतिरोधी क्षमता, फसल कटाई का समय, जलवायु, वायुमंडलीय तापमान, पक्षी, कीट तथा चूहों का प्रकोप, परिवहन एवं भंडारण की विधि इत्यादि प्रमुख हैं। दाना भंडारण के समय दाने में नमी की मात्रा, ऑक्सीजन की मात्रा, वातावरण की आर्द्रता एवं तापमान से कवकों का विकास बहुत प्रभावित होता हैं। सामान्यतः 80–82 प्रतिशत आर्द्रता एवं 18 डिग्री से 42 डिग्री से0 तापमान, कवक विकास के लिये अनुकूल होता हैं। इसी प्रकार दाने में 12 प्रतिशत या इससे ज्यादा नमी कवक, विकास के लिये अनुकूल पायी जाती हैं। अन्न और उनके उप उत्पाद, तिलहन और खलिया, मूंगफली की खली, कपास के बीज की खली, सूर्यमुखी की खली, सोयाबीन की खली, कसावा चूर्ण, मछली का चूरा एवं तैयार आहार में कवकों का संक्रमण बहुत कम पाया जाता हैं। मुर्गियों को बिछाली पद्वति में पालने पर पानी एवं दाने के बर्तन साफ न होने या नमी वाली जगहों पर आहार का भंडारण करने पर कवकों के संक्रमण की संभावना अधिक रहती हैं।

कवक जनित रोगों का मुर्गी स्वास्थ्य पर प्रभाव

अफ्लाटॉक्सिन

अफ्लाटॉक्सिन, मुख्यतः एसपरजिलस फ्लेवस तथा एसपरजिलस पैरासिटिकस प्रजाति के कवकों के द्वारा पैदा होता हैं। इसके विकास के लिये 27–27 डिग्री से तापमान अनुकूल होता हैं। दानों में 12 प्रतिशत या इससे ज्यादा नमी होने पर इस कवक का विकास आसानी से होता हैं। इनका संक्रमण मक्का, मूंगफली की खल और बिनौले की खली में अत्यंत आसानी से हो जाता हैं। अफ्लाटाक्सिन बी1, बी2, जी1 तथा जी 2 चारों विष अत्यंत प्रभावी होते हैं। अफ्लाटाक्सिन बी 1 सबसे अधिक विषाक्त एवं खतरनाक होता है। मुर्गियों को अफ्लाटाक्सिन बी1, सवंमित आहार खिलाने पर यकृत और वृक्क में विकृतियां उत्पन्न होती हैं तथा शरीर की रोगरोधी क्षमता कृप्रभावित होती हैं। इस विष का प्रभाव आहार में इनकी मौजूद मात्रा पर निर्भर करता हैं। छोटे चूजों को इससे सवंमित आहार खिलाने पर आहार भक्षण घटता हैं। शारीरिक वर्धन दर में गिरावट आती हैं, आहार रूपांतरण दक्षता कुप्रभावित होती हैं और लंगडापन आदि के लक्षण देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार अंडे देने वाली मुर्गियों में अंडे के भार में कमी आती हैं। आहार रूपांतर दक्षता अनुपात बढ जाता हैं, निषेचित अंडों से चूजे कम निकलते हैं। तथा अंडे के गुणों में गिरावट आती हैं।

अकराटॉक्सिन

एसपरजिलस एलटेसियस, एसपरजिलस अकरेसियस एवं पेनीसिलियम वेरीकोसम कवकों के द्वारा अकराटॉक्सिन पैदा होती हैं। इसमें अकराटाक्सिन ए एव बी प्रमुख कवक जनित विष हैं। इसके द्वारा मक्का, गेहूं, जौ, जई तथा राई के दाने सवंमित हो जाते हैं। इस कवक जनित विष से मुर्गियों के यकृत और वृक्क कुप्रभावित होते हैं तथा रोगरोधी क्षमता घटती हैं। इसकी 2 मि0.ग्रा0 प्रति कि0ग्रा0 की मात्रा आहार में देने पर शारीरिक वर्धन एवं रोगरोधी क्षमता घट जाती हैं। अतः मुर्गियां रोग के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती हैं। चूजों के आहार में कवक सवंमित खाध पदार्थ देने पर इनमें पानी की कमी, गिजार्ड का सूखना दुबलापन इत्यादि लक्षण देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार अंडे देने वाली मंगियों में अचानक अंडे का उत्पादन घट जाता हैं तथा अंड कवच पतले और भंजनशील हो जाते हैं।

जिरेलिनोन

यह कवक जनित विष फ्यूजेरियम मोनिलिफार्मिन, फ्यूजेरियम ट्राइकुटम के संक्रमण से पैदा होता हैं। मक्का तथा अन्य अनाजों में इसका प्राकृतिक संक्रमण होता हैं। इसमें इस्ट्रोजनी गुण पाये जाते हैं। अंडे देने वाली मुर्गियों में इसके प्रभाव के कारण गर्भाशय अपने स्थान से विचलित हो जाता हैं।

सिट्रीनिन

इसका संक्रमण मुख्यतः गेहूं , जौ तथा जई में होता हैं। जो वृक्क को क्षति पहुंचाता हैं। इसके प्रकोप से मुर्गियों में पानी की खपत एवं मल विसर्जन बढ जाता हैं।

टी 2 टाक्सिन

फ्येजरियम ट्राइसीनकुटम कवक के द्वारा टी 2 टाक्सिन पैदा होती हैं। छोटे चूजो के आहार में इसकी 3 पीपीएम से अधिक की मात्रा एवं आहार नली में विकृतियां पैदा हो जाती हैं साथ ही शारीरिक बढवार रूक जाती हैं। शारीरिक संतुलन बिगड जाता हैं और रोग रोधी क्षमता क्षीण हो जाती है।

कवक जनित विषों की सहनीय मात्राये

मुर्गियों में कवक जनित विषों की सहनीय मात्रायें विभिन्न कारकों जैसे मुर्गियों की उम्र, लिंग, पौषणिक स्तर एवं मुर्गियों से तनाव इत्यादि पर निर्भर होती हैं।

केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुमोदित की गयी विभिन्न कुक्कुट प्रजातियों के आहार में कवक जनित विषों की सहनीय मात्रा आगे सारणी में दी गयी हैं।

कुक्कुट खाध पदार्थों का कवकों से बचाव

मुर्गियों को कवक जनित विषों के प्रभाव से पूरी तरह बचा पाना कठिन होता है। परंतु आगे वर्णित उपायों के पालन करने से इन विषों के कुप्रभावों को बहुत हद तक कम किया जा सकता है –

1. जो भी कुक्कुट खाध पदार्थ आहार में मिलाना हो वह स्वस्थ, कीट, रहित एवं सूखा हुआ होना चाहिए। अतः खाध पदार्थों के क्रय के समय इन बातों पर पूरा ध्यान देना चाहिए।
2. भंडारण किये गये खाध पदार्थों में समय समय पर नमी की मात्रा की जांच करते रहना चाहिए।
3. तैयार आहार या आहारीय खाध पदार्थों का अधिक सयम तक भंडारण नहीं करना चाहिए।
4. कुक्कुट खाध पदार्थों का भंडारण सूखे भंडारों में यथासंभव अवात वातवरण में करने का प्रबंध करना चाहिए।
5. भंडारित की गयी सामग्री में 12 प्रतिशत से ज्यादा नमी नहीं होनी चाहिए।
6. ऐसे सभी उपकरण जैसे दाने और पानी के बर्तनों इत्यादि की समय समय पर सफाई करते रहना चाहिए।
7. यदि आहार में कहीं से कवक का संक्रमण हो जाये, तो उसे वहां से अलग करके नष्ट कर देना चाहिए।
8. कवक के प्रसार को रोकने के लिये आहार में कैल्शियम प्रोपियोनेट 1.1 से 1.4 कि0ग्रा0 प्रति टन आहार या प्रोपियोनिक अम्ल 1.6 कि0ग्रा0 प्रति टन आहार की दर से मिलाने पर अनुकूल परिणाम प्राप्त होता हैं।
9. कवकों की वृद्धि को रोकने के लिये आहार में कॉपर सल्फेट या कुछ अन्य रसायनों का (जैसे अमोनिया, कैल्शियम, मिथाइल एमाइल, ओजोन, सोडियम हाइपोक्लोराइड तथा साल्वेंट मिश्रण इत्यादि) भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

''संरक्षित खेती–मृदा उर्वरता की गारन्टी''

विनोद कुमार यादव'ए डा0 रवि शंकर सिंह'' एवं डा0 आर0के0 पाठक'''

संरक्षित खेती (कन्जरवेशन एग्रीकल्चर) षब्द से अभिप्राय है कि कम से कम जुताई के साथ फसलों को उगाया जाय, जिससे कि फसल के अवषेश मृदा सतह पर जमा हो सकें तथा जिनके सड़ने के उपरान्त कार्बन, नाइट्रोजन व अन्य पोशक तत्व मृदा को प्राप्त हो सके।

''मृदा को नाम मात्र या बिना जुताई किये, उसकी सतह पर फसल अवषेशों को संरक्षित कर फसलों का उगाया जाना या फसल प्रबन्धन करना ही संरक्षित खेती कहलाता है''।

इस प्रकार की खेती, उन राज्यों जहाँ पर भूमि का दोहन बहुत अधिक किया गया है, अधिक उपयोगी है, जैसे कि पंजाब, हरियाणा, पष्चिमी उत्तर प्रदेष आदि संरक्षित खेती के मुख्य लक्षण निम्न हैंः–

भूमि में कम से कम या बिना जुताई के ही कृशि क्रियायें की जाय।

मृदा सतह पर फसल अवषेश का प्रबन्धन अच्छी तरह से किया जाय।

फसल–चक्रों को समय–समय पर अपनाया जाय।

संरक्षित खेती ही क्यों ?

दक्षिण–पूर्व एषिया जिसमें भारत एक मुख्य देष है जहां मुख्यतया खाद्यान्न फसलों जैसे–धान, गेहूँ व मक्का की सघन खेती की जाती है, ये खाद्यान्न फसलें यहां के लोगों का मुख्य आर्थिक श्रोत भी है। ये फसलें उनके जीवन व स्वास्थ्य में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। किन्तु इधर कुछ वर्शों से इन फसलों की उत्पादकता में लगातार गिरावट आई है, जैसे कि 1966–94 में वृद्धि दर अधिकतम थी, जो कि 1995–2005 में गिरकर आधी या एक तिहाई ही रह गई। इस समय यह बिल्कुल ही स्थिर है, जिसका मुख्य कारण खाद्यान्न फसलों का ही वर्श दर वर्श उगाया जाना है, जिससे हमारी भूमि की उर्वराषक्ति में बहुत अधिक गिरावट आई है और भूमि एक तरह से निर्जीव जैसी हो गई है, जिससे उत्पादकता एकदम रूक गई है। इस उत्पादकता की गिरावट के मुख्य कारणों में एकल कृशि प्रणाली, जल श्रोतों एवं भूमि की उर्वराषक्ति का ह्यस आदि प्रमुख कारण हैं।

हमारी जनसंख्या वर्श दर वर्श बढ़ती ही जा रही है, इस कारण हमारे सामने यह चुनौती खड़ी हो गई है कि हमें भूमि की उर्वरता को संरक्षित रखते हुए इस बढ़ती हुई जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराना है। इन सभी चुनौतियों से निपटने के लिए संरक्षित खेती एक प्रमुख एवं कारगर उपाय सावित हो सकती है।

भारत के परिपेक्ष्य में:

भारत में लगभग 10 वर्श से अधिक समय व्यतीत हो गया है, जब साधन संरक्षण तकनीक का उदय हो गया था। यह मुख्यतया राज्यों के कृशि विष्वविद्यालयों एवं भारतीय कृशि अनुसंधान परिशद् के संयुक्त प्रयत्नों का परिणाम था। यह तकनीक मुख्यतया गंगा–यमुना के मैदानी भागों मे जहाँ धान–गेहूँ फसलचक्र प्रमुख रूप से अपनाया जाता है, के लिए उपयोगी है। किन्तु यह खेती षुश्क, अर्द्ध षुश्क एवं पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयोगी नही है अतः वहाँ इसे नही अपनाया जाना चाहिए।

वर्शा आधारित अर्द्धषुश्क एवं षुश्क क्षेत्र:

वर्शा आधारित अर्द्धषुश्क क्षेत्र, जो कि वर्शा की अनिष्चितता, कम उर्वर मृदा और कम उत्पादकता के लिए जाने जाते हैं, यहाँ जीरो टिलेज या कम से कम जुताई तब तक लाभकारी नही है, जब तक कि फसल अवषेशों को मृदा की सतह पर नही प्रयोग किया जाता है, क्योंकि वर्शा का अधिकांष जल रनआफ द्वारा नश्ट हो जाता है, इस प्रकार अवषेश की उपलब्धता पर ही इन दषाओं में संरक्षित खेती निर्भर करती है।

सिंचाई एवं पर्यावरणीय सम्बन्ध:

भारत में संरक्षित खेती को गंगा–यमुना के मैदानी भागों मुख्यतया पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेष, बिहार एवं पष्चिम बंगाल में बढ़ावा दिया जा रहा है, क्योंकि यहाँ पर उत्पादन में स्थिरता, अधिक उत्पादन लागत, साधनों की गुणवत्ता में गिरावट, जलस्तर का गिरना और पर्यावरणीय समस्यायें प्रमुख रूप से सम्मुख आ रही है। पूर्वी क्षेत्र जैसे–उत्तर प्रदेष, बिहार एवं पष्चिम बंगाल में भी इसको बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे फसल प्रणाली की उत्पादकता को बढ़ाया जा सके। इसके अतिरिक्त जीरो टिलेज द्वारा गेहूँ की बुआई, रेज्डबेड प्लान्टिंग एवं कुछ भूमि समतलीकरण द्वारा भी फसल में पौधों की संख्या, पकने में एकरूपता तक जल का उचित उपयोग आदि को भी बढ़ाया जा सकता है।

संरक्षित खेती के लाभ:

1. फसल उत्पादन लागत का घटना:

चूँकि यह जीरो टिलेज तकनीक पर आधारित होती है। अतः फसल उत्पादन लागत में कमी आती है। इसके अतिरिक्त कई अध्ययनों से यह भी सिद्ध हो चुका है कि गेहूँ की उत्पादन लागत में लगभग रू0 1500/– से रू0 2000/– प्रति है0 तक की कमी की जा सकती है।

2. खरपतवारों की संख्या में कमी:

कई अध्ययनों से पता चलता है कि गेहूँ का मामा (फैलेरिस माइनर) जो कि गेहूँ का मुख्य खरपतवार है, की संख्या में कमी आ जाती है। इसके अतिरिक्त जीरो टिलेज के कारण अन्य खरपतवारों की संख्या में भी कमी आ जाती है, जिससे खरपतवारनाषियों का भी उपयोग कम होता है और किसान को कम पैसा व्यय करना पड़ता है।

3. जल एवं पोशक तत्वों की बचत:

कुछ प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि संरक्षित खेती में 20–30 प्रतिषत पानी एवं पोशक तत्वों की बचत होती है।

4. उपज का बढ़ना:

यदि सुनियोजित तरीके से जीरो टिलेज द्वारा गेहूँ की बुआई की जाये, तो उपज में 4–6 प्रतिषत तक की बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है।

5. पर्यावरणीय लाभ:

चूँकि इस प्रकार की खेती में फसलों को जीरो टिलेज द्वारा ही बोते हैं। अतः फसल अवषेश मृदा सतह पर संरक्षित होते रहते हैं तथा फसल अवषेश को जलाते नही हैं, जिससे ग्रीन हाउस गैसों जैसे–कार्बनडाई आक्साइड, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड की वातावरण में कमी आती है और पर्यावरण में सुधार होता है।

6. फसल विविधीकरण का सुअवसर:

जब हम संरक्षित कृशि अपनाते हैं, तो इसमें फसलचक्र एवं कृशि वानिकी को भी अपनाते हैं, जिससे कृशि में विविधीकरण होता है और प्राकृतिक वातावरण में सुधार होता है।

7. मृदा की दषा में सुधार:

चूँकि षून्य जुताई सीधे फसल अवषेश प्रबन्धन से जुड़ी है। इस कारण अवषेश का धीरे–धीरे विनाइट्रीकरण होता है, जिससे मृदा की संरचना में सुधार होता है, इसके अतिरिक्त मृदा सतह पर, अवषेश मल्च की तरह कार्य करता है, जिससे मृदा ताप में कमी, वाश्पोत्सर्जन में कमी एवं मृदाजीव की क्रियाषीलता में सुधार होता है।

संरक्षित खेती की समस्यायें:

1. यद्यपि कई अर्थपूर्ण प्रयत्न किये गये, जिससे षून्य जुताई द्वारा गेहूँ की बुआई मषीनों द्वारा की जा सके। किन्तु अच्छा, आवष्यक एवं गुणवत्तापूर्ण प्रयत्न वही कहा जायेगा, जिसके द्वारा पौधों की दूरी, फसलचक्र, स्थायी बेड एवं कूँड़ में रोपाई तथा कटाई द्वारा छूटे फसल अवषेशों को संरक्षित किया जा सके, किन्तु संरक्षित खेती हेतु अच्छी मषीनरी का अभाव है, जिससे षून्य जुताई में गेहूँ की बुआई, पौधों की दूरी, फसलचक्र, कूँड़ में रोपाई तथा फसल अवषेशों का उचित प्रबन्धन किया जाना सम्भव नहीं हो पा रहा है।

2. संरक्षित खेती में सभी तरह की क्रियाओं जैसे–पौधों की रोपाई एवं कटाई, जल एवं पोशक तत्वों का प्रबन्धन, रोग एवं कीट नियन्त्रण आदि में संरक्षण लागू किया जाता है, जो कि किसानों के लिए तकनीकी रूप से कठिन होता है।

3. संरक्षित खेती के प्रबन्धन के लिए यह आवष्यक है कि वैज्ञानिक किसानों के साथ मिलकर कार्य करें तथा वैज्ञानिक नई–नई तकनीकों की जानकारी तथा उनका उपयोग समय–समय पर किसानों को बताते रहें, तभी यह अच्छी तरह सम्भव है।

4. वह क्षेत्र जहाँ मृदा का तापमान बहुत कम या षून्य से कम होता है और षून्य जुताई द्वारा बुआई की जाती है तो उपज में कमी आती है। इसके अतिरिक्त यहाँ की भूमि में मृदा कम्पेक्सन भी अधिक होता है।

5. कृशि षोध एवं तकनीकों का अच्छी तरह प्रचार–प्रसार न किया जाना भी इस प्रणाली के अपनाये जाने में बाधक है।

6. किसानों को संरक्षित खेती के बारे में भरपूर जानकारी का न होना।

चुनौतियाँ:

संरक्षित खेती के बढ़ने में निम्नलिखित चुनौतियाँ हैः–

1. संरक्षित खेती की क्रिया विधि/तरीकों की समझ का न होनाः

संरक्षित खेती, पारम्परिक खेती की अपेक्षा काफी जटिल है, इसको समझने के लिए खेती की मूल विधियों/तरीकों तथा किसी तरीके या विधि का अगले पर क्या प्रभाव पड़ता है, अच्छी तरह से समझना अति आवष्यक है। जैसे–फसल अवषेश मृदा सतह पर मल्च का कार्य करते हैं, जिससे वाश्पन में कमी आती है और साथ ही साथ भूमि का तापमान भी नियन्त्रित रहता है। इस प्रकार फसल अवषेशों के बारे में पूर्ण जानकारी होना अति आवष्यक है तभी हम इसका उचित लाभ ले सकते हैं।

2.किसानों व वैज्ञानिकों के मध्य तालमेल में कमी:

किसानों व वैज्ञानिकों के मध्य तालमेल में कमी से किसानों को अच्छी तकनीकों की जानकारी नही मिल पाती है और इस प्रकार इनका उचित लाभ नही मिल पाता है।

3.तकनीकी स्तर पर चुनौतियाँ:

पारम्परिक खेती के मूल सिद्धान्त जो कि संरक्षित खेती के मूल तत्व हैं, उनकों समझना और कृशि में लागू करना किसानों के लिए कठिन है। अतः वे उचित लाभ नही ले पाते हैं।

4.किसी क्षेत्र विषेश में पूर्व में विभिन्न प्रकार की क्रियायें, कृशि, वातावरण, भूमि तथा फसलों के सन्दर्भ में की गयी हो, उनके बारे में कृशकों में ज्ञान प्राप्त करना भी एक कठिन चुनौती है।

इस प्रकार स्पश्ट हो जाता है कि संरक्षित खेती आज के परिपेक्ष्य में जितना लाभदायक है, उतना ही इसको अपनाना जटिल है। अतः इसको बढ़ाने के लिए काफी बड़े प्रयत्न की जरूरत है।

सीताफल में संकर बीज उत्पादन की तकनीक

पुष्प्जैविकी: सीताफल में नर व मादा पुष्पि एक ही पौधे पर अलग-अलग जगह पर लगते हैं। फूल बडे आकार के तथा चमकीले पीले रंग के होते हैं। मादा पुष्पह आकार में नर पुष्पोंग से बडे होते हैं। मादा फूल छोटी डंडी एवं नीचले भाग में फल आकृति लिए होते हैं।

नर पुष्पा की डंडी लम्बीी होती है। पौधों में प्राय नर फूल पहले आते हैं तथा बाद में मादा एवं नर पुष्पो मिश्रित रूप से आते हैं। फूल प्रात: काल में 5 से 7 बजे के बीच खिलते हैं और 12 बजे दोपहर तक खिले रहकर दोपहर बाद बंद हो जाते हैं। पुष्पम खिलने के समय नर पुष्पो में अत्यिधिक जीवित परागण मिलते हैं तथा मादा फूल में वर्तिकाग्र भी निषेचन के लिए अधिकतम ग्राही होता है। परागण का कार्य प्रात: काल 7 बजे से पहले ही पूरा कर लेना चाहिए क्योतकि समय बीतने पर परागण चिपचिपा और गीला हो जाता है। मकरन्दा ग्रन्थियां मादा पुष्पों में नर पुष्पोंक की अपेक्षा अधिक होती हैं। परागण कार्य कीटों जैसे मधुमक्खियों द्वारा कि?या जाता है।

खेत का चुनावः संकर बीज उत्पादन के लिए खेत समतल, उपजाऊ एवं खरपतवार रहित होना चाहिए तथा उसमें समुचित जल न किसी की व्यखवस्थाग होनी चाहिए। खेत की मिटटी का पीएच मान 6.5-7.5 के बीच उपयुक्ती रहता है। खेत में सिंचाई की समुचित व्यिवस्थान होनी चाहिए।

मौसम का चुनाव: सीताफल के संकर बीज उत्पावदन के लिए ग्रीष्मस ऋतु उपचुक्तट होती है। पोली हाऊस में जनवरी में बीज बुआई करके फरवरी के पहले सप्ताह में पोध रोपाई की जाती है।

खाद एवं उर्वरक: एक किलोग्राम गोबर की सडी खाद, 50 ग्राम डी.ए.पी. तथा २५ ग्राम एम.ओ.पी.प्रति थमला (हिल) बुआई से 5-7 दिन पहले मिलाना चाहिए। 50 ग्राम यूरिया प्रति थमला, पौधों के 30-35 दिन के होने पर, देना चाहिए। नत्रजन की अधिक मात्रा देने से बचना चाहिए अन्यधथा पौधों की वनस्पगतिक बढवार अधिक होगी और परिणाम स्व रूप फलन प्रभावित होगा। १% यूरिया या डी.ए.पी.के घोल का छिडकाव फल विकसित होते समय करने से फल अधिक संख्या में तथा अच्छीए गुणवत्ताढ वाले होते हैं। छिडकाव के समय खेत में पर्याप्तत नमी होनी चाहिए।

पृथक्कारण दूरी: सीताफल एक पर-परागित (cross polinated) एवं उभयलिंगाश्री (नर व मादा पुष्पक का एक ही पौधे के अलग अलग भागों पर आना) फसल है। आनुवांशिक रूप से शुद्व बीज उत्पाकदन के लिए, बीज फसल, अन्यत किस्मों तथा व्या वसायिक संकर किस्मों के बीच में न्यूबनतम 1000 मीटर की दूरी होनी चाहिए। नर व मादा पैतृकों की बुवाई अलग-अलग खण्डों में न्यूयनतम 5 मीटर की दूरी पर होनी चाहिए। पृथक्करण दूरी के अन्दअर अन्य कद्दू वर्गीय फसलों जैसे चप्प न कद्दू एवं विन्टकर स्कै वेश नही उगानी चाहिए।

बीज का स्रोत: संकर बीज उत्पाटदन के लिए पैतृक जननों (Parents) का आधारीय बीज (Foundation seed)ही प्रयोग किया जाता है जिसे सम्बैन्धित अनुसंधान संस्थांन या कृषि विश्वदविद्यालयों से प्राप्ता किया जा सकता है। बीज दर व पौधअंतरण: एक हैक्टे्यर के लिए 2 कि.ग्रा. बीज (मादा पैतृक का 1.5 किग्रा तथा नर पैतृक का 0.5किग्रा) पर्याप्त होता है। यदि? अंकुरण अधि?क हो तो बीज की मात्रा घटाई जा सकती है। निरीक्षण व परागण की सुविधा के लिए दो सिंचाई नालियों के बीच की दूरी 4 मीटर तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 1.0 मीटर पर्याप्त रहती है।

बीज की बुवाई: कद्दू जातीय सभी फसलों में बीज अंकुरण के लिए, दिन-रात का औसत तापमान 25 से 30 डिग्री के बीच होना आवश्यलक है। बीजों को बुवाई के 18-24 घंटे पुर्व उपचारित अवश्य५ करें। उपचारित करने के लिए, 2 ग्राम थीराम या कैप्टाकन प्रति किग्रा बीज के हिसाब से कुल बीज की मात्रा के बराबर पानी में घोल बनाकर,नर व मादा बीजों को चिन्हित करके भिगोदें। बुवाई से पूर्व बीजों को छाया में फैलाकर सुखा दें। सीताफल की बुआई खेत में सीधे बीज बुआई करके या पोलीहाऊस में पौध तैयार करके बाद में खेत में रोपाई करके की जाती है।

सीधे बीज बुआई विधि में प्रति हिल दो बीजों की, 2-3 इंच गहराई में बुआई करते हैं। बुआई के 15 दिनो बाद 2-4 पत्तियां आने पर अतिरिक्ता पौधों को निकाल देना चाहिए तथा प्रति हिल एक पौधा रखना चाहिए। उत्तमर भारत में अंकुरण के उपयुक्ता तापमान 15 फरवरी के बाद ही आता है इसलिए इस विधि से बुआई करने पर फूल आने के समय तापमान बहुत अधिक हो जाता है जिससे नर फूल अधिक बनते हैं। साथ ही परागण में सहायक कीट भी अधिक ताप के कारण कम हो जाते हैं और फसल पैदावार तथा गुणवत्तान पर बुरा प्रभाव पडता है।

संकर बीज उत्पाादन के लिए पोध तैयार करने की विधि ही उपयुक्तअ रहती है। जनवरी के प्रथम सप्ताबह मे स्थानई या अस्थाएई पोलिहाऊस म पस्टिक की थैलियों में मिट्टी भरकर बीज बुआई करते हें ।फरवरी के पैहल सप्ताह में तैयार पोध को खेत में रोपाई कर दी जाती है। इस विधि से बुआई करने पर फूल बनते समय तापमान बहुत अनुकूल होता है मादा फूल अधिक आते हैं तथा उस समय परागण करने वाले कीट भी अधिक होने से फसल अच्छी होती है।?

नर-मादा पैतृकों का अनुपात तथा बुवाई विधि: संकर बीज उत्पा दन फसल के लिए पैतृकों की बुआई मुख्यात: दो विधियों से की जाती है।

एक खण्ड विधि: इस विधि में मादा तथा नर पैतृको मे रोपाई/बुवाई अनुपात 3:1 रखना चाहिए। पहले एक थमला नर बीज द्वारा तथा फिर 3 थमलें मादा बीज या पोध रोपाई द्वारा बोए जाते हैं। फिर इसी क्रम को बार बार दोहराया जाता है। नर पैतृक के पौधों को लकडी के डंडों या खुट्टियों से चिन्हिहत करें। नर तथा मादा पैतृको की बुआई या रोपाई के लिए अलग अलग श्रमिकों को लगाना अच्छाय होता है।

सनाय (केसिया अंगस्टीफोलिया) – एक दस्तावर औषधीय फसल

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा .षि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

सनाय को अरब देशों से भारत में लाया गया था। आजकल भारत का सनाय की खेती में विश्व में प्रथम स्थान है। भारत से प्रतिवर्ष 30 करोड़ रूपये से अधिक की सनाय की पत्तियों का निर्यात किया जाता है। यह लेगुमीनोसी कुल का पौधा है। जिसको हिन्दी में सनाय, अंग्रेजी में इण्डियन सेन्ना, राजस्थानी में सोनामुखी कहते हैं। सनाय का पौधा काँटेरहित व झाड़ीनुमा होता है, जिसकी ऊँचाई 2.0 से 4.0 फुट तथा शाखायें टेढ़ी–मेढ़ी होती हैं। शीत काल में चमकीले पीले रंग के फूल खिलते हैं। इसकी फली हल्के हरे रंग की होती है व पकने पर गहरे भूरे रंग की हो जाती है। बीज भी भूरे रंग के होते है। शुरू में इसकी खेती तमिलनाडू में शुरू हुई थी लेकिन अब यह केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा राजस्थान के काफी षगों में उगाया जा रहा है। हरियाणा के दक्षिण–पश्चिम भागों में इसकी खेती आसानी से की जा सकती है।

अधिकतर बंजर भूमि में उगाये जाने के कारण इस औषधीय पौधे के लिये न तो ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है और न ही खाद तथा विशेष देखभाल की जरूरत पड़ती है। इस पौधे को गाय, भैंस, हिरण व अन्य पशु आदि नहीं खाते हैं। इस प्रकार भारत के विभिन्न भागों में खाली पड़ी बंजर भूमि में इसकी खेती करके लाभ कमाया जा सकता है।

औषधीय उपयोग: सनाय अधिकतर एक रेचक (संगंजपअम) का कार्य करती हैं। इसकी पत्तियों तथा फलियों में सेनोसाइड पाए जाते हैं। सनाय की पत्तियों का मुख्य उपयोग पेट की बीमारियों से सम्बंधित दवाई बनाने में किया जाता हैं, परन्तु इससे अनेक अन्य किस्म की दवाईयाँ भी बनाई जा रही हैं जैसे पीलिया, अस्थमा, मलेरिया, बुखार, अपच आदि। चर्म रोगों में भी इसकी पत्तियों का उपयोग होता है। पत्तियाँ दस्तावर होती हैं।

जलवायु: इसकी खेती के लिये शुष्क जलवायु तथा कम वर्षा की आवश्यकता होती है। यह पौधा न्यूनतम 5.0 डिग्री सैंटीग्रेड तथा अधिकतम 50.0 डिग्री सैंटीग्रेड तक की गर्मी सहन करने की क्षमता रखता है। इसकी खेती के लिये 50 सैं. मी. वर्षा काफी रहती है। इसकी जड़ें जमीन में काफी नीचे तक चली जाती हैं

को 2–3 बार जुताई करके खरपतवार से मुक्त कर लेना चाहिये तथा सुहागा लगाकर खेत को समतल बना लें।

बिजाई का समय: इसकी बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह से लेकर अगस्त के अन्तिम सप्ताह तक भूमि: इसकी खेती के लिये रेतीली से लेकर दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। अतः ऐसी जमीन जहाँ किसी प्रकार की खेती न होती हो तथा अन्य जगह जहाँ कोई फसल ले पाना संभव न हो, इसकी खेती के लिये उपयुक्त है। इसके लिये उचित जल निकास बहुत ही जरूरी है।

खेत की तैयारी: बिजाई से पहले खेत करनी चाहिये। सिंचित क्षेत्रों में इसकी बिजाई मार्च में भी की जा सकती है। मौनसून की अन्तिम बरसात के बाद इसका बोना ज्यादा लाभदायक होता है।

बीज की मात्रा: एक एकड़ के लिये लगभग 4 किलो बीज की आवश्यकता होती है।

किस्म: ए.एल.एफ.टी. 1, सोना एवं त्रिनवेली विकसित किस्में हैं।

बिजाई का तरीका: बिजाई से पहले बीज के जमाव का परीक्षण अवश्य कर लें। मौनसून की अन्तिम बरसात के तुरन्त बाद हल या ट्रेक्टर से लाईनों में बिजाई करें तथा लाईन से लाईन और पौधे से पौधे का फासला 30 सैं. मी. रखें। प्रायः 10–12 दिनों में अंकुरण हो जाता है। बीज को 1.5 से 2.0 सें. मी. से ज्यादा गहरा नहीं डालना चाहिये तथा बिजाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिये। बिजाई से पहले बीज को 24 घंटे पानी में भीगोकर रखने व 2 घंटे छाँव में सूखा लेने पर जमाव जल्दी और अच्छा होता है।

खाद: खाद की कोई खास आवश्यकता नहीं पड़ती, परन्तु अच्छी फसल लेने के लिये 4–5 टन गली–सड़ी गोबर की खाद डालनी चाहिये।

सिंचाई: इस फसल में पूरे वर्ष 2–3 सिंचाई की जरूरत पड़ती हैं।

निराई–गुड़ाई: बिजाई के 25–30 दिन बाद निराई–गुड़ाई अवश्य करें, जिससे खरपतार नष्ट हो जायें। वर्ष में 2–3 बार निराई–गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है।

बीमारी तथा रोकथाम: सनाय की फसल में बीमारी से लड़ने की पूरी क्षमता होती है। इस फसल को दीमक व टिड्डी भी कम हानि पहुँचाती है। बरसात के दिनों में कभी–कभी इसकी पत्तियों पर काले धब्बे दिखते हैं। लेकिन किसानों को घबराना नहीं चाहिये। धूप निकलने पर अपने आप ठीक हो जाते हैं। कभी–कभी फूल खाने वाले कीड़ों का प्रकोप होता है। इसके लिए नीम के पत्तों/निंबोली का घोल या गोमूत्र को पानी में मिलाकर छिड़कने से लाभ होता है।

फसल की कटाई तथा संग्रह: फसल को कोई विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं पड़ती। बिजाई के लगभग 90–100 दिन बाद पत्तियाँ काटने योग्य हो जाती हैं। पौधों को 3६–4६ जमीन से ऊपर तेज धार वाली हंसिया से काटना चाहिये। काटते समय ध्यान रहे कि पौधा उखड़ना नहीं चाहिये। काटते समय खेत की मिट्टी ज्यादा गिली नहीं होनी चाहिये। बाद की कटाईयाँ 60–70 दिन बाद करते रहना चाहिये। पौधों को काटकर छोटी–छोटी ढेरियां बना लेनी चाहिए। कटाई में देरी नहीं करनी चाहिए अन्यथा पुराने पत्ते झड़ने लगते है जिससे उपज कम होती है तथा पत्तों की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। पूरे वर्ष में चार कटाई तक ले सकते हैं। सर्दियों में पाला पड़ने का डर रहता है। अतः पहली कटाई पाला पड़ने से पहले करनी चाहिए। पौधों को छाया में सूखाने के 4–5 दिन बाद बड़ी–बड़ी ढेरियाँ बना लेनी चाहिये। इसके बाद तिरपाल बिछाकर, पत्ते झाड़ लेने चाहिये तथा पत्ते और डंठल अलग कर लेते हैं। पत्तों को अच्छी तरह सूखाकर बोरो में भरकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिये जहाँ पर नमी न पहुँचे।

बीज उत्पादन: किसानों को स्वयं अपना बीज तैयार करना चाहिये। खेत में अच्छे तथा स्वस्थ पौधों को छोड़ देना चाहिये तथा उन पर फलियाँ लगने दें। जब फलियाँ पक जाती हैं तो भूरे रंग की हो जाती है, तभी उनको तोड़कर 3–4 दिन तक धूप में सुखा लेना चाहिये। सुखने पर फलियों को हाथ द्वारा रगड़कर बीज को अलग करके बोने के लिये सुरक्षित रख लेना चाहिए।

नवरात्रि : नौ दिन के नौ विशेष प्रसाद

हर दिन लगाएं मां को विशेष भोग

प्रथम नवरात्रि के दिन मां के चरणों में गाय का शुद्ध घी अर्पित करने से आरोग्य का आशीर्वाद मिलता है। तथा शरीर निरोगी रहता है।

दूसरे नवरात्रि के दिन मां को शक्कर का भोग लगाएं व घर में सभी सदस्यों को दें। इससे आयु वृद्धि होती है।

तृतीय नवरात्रि के दिन दूध या दूध से बनी मिठाई खीर का भोग माँ को लगाकर ब्राह्मण को दान करें। इससे दुखों की मुक्ति होकर परम आनंद की प्राप्ति होती है।

मां दुर्गा को चौथी नवरात्रि के दिन मालपुए का भोग लगाएं। और मंदिर के ब्राह्मण को दान दें। जिससे बुद्धि का विकास होने के साथ-साथ निणञ्य शक्ति बढ़ती है।

नवरात्रि के पांचवें दिन मां को केले का नैवैद्य चढ़ाने से शरीर स्वस्थ रहता है।

छठवीं नवरात्रि के दिन मां को शहद का भोग लगाएं। जिससे आपके आकर्षण शक्ति्त में वृद्धि होगी।

सातवें नवरात्रि पर मां को गुड़ का नैवेद्य चढ़ाने व उसे ब्राह्मण को दान करने से शोक से मुक्ति मिलती है एवं आकस्मिक आने वाले संकटों से रक्षा भी होती है।

नवरात्रि के आठवें दिन माता रानी को नारियल का भोग लगाएं व नारियल का दान कर दें। इससे संतान संबंधी परेशानियों से छुटकारा मिलता है।

नवरात्रि की नवमी के दिन तिल का भोग लगाकर ब्राह्मण को दान दें। इससे मृत्यु भय से राहत मिलेगी। साथ ही अनहोनी होने की? घटनाओं से बचाव भी होगा।

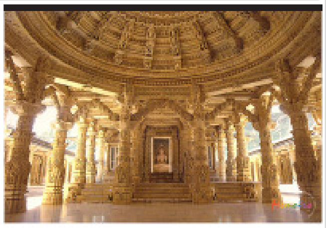

माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन है। माउंट आबू में अनेक पर्यटन स्थल हैं। इनमें कुछ शहर से दूर हैं तो कुछ शहर के आसपास ही हैं।

माउंट आबू के मध्य में स्थित यह झील माउंट आबू का सबसे पहला आकर्षण का केन्द्र है।

नक्की झील माउंट आबू का दिल है।

नक्की झील माउंट आबू का एक बेहतरीन पर्यटक स्थल है।

प्राकृतिक सौंदर्य का नैसर्गिक आनंद देनेवाली यह झील चारों ओ? पर्वत शृंखलाओं से घिरी है।

झील में एक टापू को ७० अश्वशक्ति से चलित विभिन्न रंगों में जल फ़व्वारा लगाकर आकर्षक बनाया गया है जिसकी धाराएँ ८० फुट की ऊँचाई तक जाती हैं।

नक्की झील सदिञ्यों में अक्सर जम जाया करती है।

एक हिन्दू देवता ने अपने नाखूनों से खोदकर यह झील बनाई थी। इसीलिए इसे नक्की (नख या नाखून)नाम से जाना जाता है।

आरंभ में इसे नख की झील कहा जाता था। समय के साथ बदल कर इसका नाम नक्की झील पड़ गया।

झील से चारों ओर के पहाडि़यों का नज़ारा बेहद सुंदर दिखता है।

हरी-भरी पहाड़ियों से घिरी नक्की झील लगभग ढाई किमी. के दायरे में फैली है।

इस के चारों तरफ एक साफ-सुथरी सड़क है। इसके किनारे एक छोटा-सा पार्क है।

झील में नौका विहार की भी व्यवस्था है।

झील के किनारे पर बैठे कर काफ़ी देर तक लोग झील में तैरते सफेद जलचर और तैरती नौकाओं को देखते है और नौका विहार का आनंद लेते है।

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिषाचार्य पं.जयदत्त व्यास जयपुर

अक्टूबर -2013 /01/10/2013 से 14/10/2013

आपके नाम के प्रथम अक्षर से पाक्षिक फल

AJS	शारीरिक मानसिक परेशानियां आर्थिक नुकसान, सावधानी रखें।
BKT	शान्तिपूर्ण समय, भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।
CLU	पारिवारिक, आर्थिक परेशानियां, खर्च अधिक लाभ कम।
DMV	भाई–बन्धुओं से परेशानियां, स्त्रीयों से लाभ, धनलाभ का योग बनता है।
NEW	धनलाभ, व्यापार लाभ, जमीन सम्बन्धित लाभ का योग बनता है।
FOX	धन, धर्म, तथा यश, लाभ, लाभपूर्ण समय।
GPY	पारिवारिक कलह, रोग, कई प्रकार के कष्टपूर्ण योग।
HQZ	मित्रों से लाभ, विजय, व्यापार सफलता, स्त्रीलाभ भी प्राप्त होता है।
IR	शारीरिक कष्ट, उद्वेग, पूर्ण समय सावधानी रखें।

सृष्टी एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः..

संस्था का नामः..

पूरा पताः..

ग्राम :..................................तहसील :..

जिलाः..................................राज्यः..............................पिन कोड

दूरभाष कार्यः..................................निवासः..................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 तीन वर्ष :351 पांच वर्ष :501

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :....................................

बैंक का नामः................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.......................दिनांकः................

स्थानः................................. प्रतिनिधि का नामः.......................हस्ताक्षर सदस्यः................

दिनांकः.......................

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

पुरन पोली

यह महाराष्ट्र में बनाई जाने वाली पारम्परिक स्वीट डिश है. पूरन पोली कई प्रकार की बनाई जाती हैं, लेकिन मुख्यत: चने की दाल की पूरन पोली ही अधिक प्रचलित है. खाने में ये बहुत ही लाजबाव होती है. पूरन पोली को आप २-३ दिन तक रख कर खा सकते हैं. बनाना भी बड़ा आसान है. तो आइये आज हम पूरन पोली (puran poli recipe) बनायें.

आवश्यक सामग्री - Ingreditents for puran poli

आटा गूथने के लिये

गेहूं का आटा या मैदा - 350 ग्राम (3 कप) नमक - स्वादानुसार (आधा छोटी चम्मच)

तेल या घी - 2 टेबल स्पून पूरन बनाने के लिये पिठ्ठी

चने की दाल - 150 ग्राम (3/4 कप)

चीनी या गुड़ -५० ग्राम (1/3 कप) छोटी इलाइची - 8 या 10 घी या रिफाइन्ड तेल - आधा कप

विधि How to make Pooran Poli

चने की दाल को ४-५ घन्टे पहले पानी में भिगो दीजिये.

आटे को किसी बर्तन में छान लीजिये, २ टेबल स्पून घी और स्वादानुसार नमक डाल कर अच्छी तरह मिला लीजिये. आटे को गुनगुने पानी की सहायता से नरम आटा गूथ लीजिये. गूथे हुये आटे को सैट होने के लिये 20 मिनिट के लिये रख दीजिये.

दाल को कुकर में 1/3 कप पानी डाल कर उबालने रख दीजिये. एक सीटी आने के बाद गैस बन्द कर दीजिये. कुकर से दाल निकालिये, ठंडा कीजिये और बिना पानी डाले मिक्सी से बारीक पीस लीजिये.

कढ़ाई में एक टेबल स्पून घी डाल कर गरम कीजिये, घी में पिसी हुई दाल , पिसी हुई चीनी डाल दीजिये. (यदि आप मीठे के लिये गुड़ का प्रयोग कर रहे हैं तो गरम घी में गुड़ को तोड़ कर डालें और पिघला लें अब पिसी हुई दाल डाल कर) 5 मिनिट भूनिये, ठंडा कीजिये और उसमें इलाइची पीसकर मिला दिजिये. पूरी में भरने के लिये पूरन तैयार है.

आग पर तवा रख कर गरम कीजिये. गूथे हुये आटे से थोड़ा सा आटा तोडि़ये और गोल कीजिये. सूखा आटा लगाकर, 3 इंच व्यास में बेल लीजिये, २ चम्मच पूरन इस बेली हुई पूरी के उपर रख कर रखिये और पूरी को चारों ओर से उठाकर, बन्द करके, दोनों हाथों की हथेली के बीच रख कर दबा कर थोड़ा सा बड़ा लीजिये. (यदि ?सा नहीं करेगे तो आपकी पूरन पोली बेलते समय फट सकती है). अब इस पूरन भरे हुये गोल को सूखे आटे(परोथन) में लपेट कर चकले पर बेलन की सहायता से गोल 6-7 -8 इंच के व्यास की पूरन पोली बेल लीजिये . बेले हुई पूरन पोली को तवे पर डाल कर दोनों तरफ घी लगा कर पलट पलट कर ब्राउन होने तक सेकें. तवे से पूरन पोली उतार कर प्लेट में निकाल कर रखिये. दूसरी पूरन पोली इसी तरह बेल कर तवे पर डालिये और सेकिये. इसी तरह सारी पूरन पोली (Pooranpoli) बना कर तैयार कर लीजिये. आपकी पूरन पोली (puran poli recipe) तैयार हैं. पूरन पोली को चटनी, अचार या अपने मनपसन्द सब्जी के साथ परोसिये और खाइये, अपने अनुभव हमारे साथ अवश्य शेयर कीजिये

इस बार आधी रह जाएगी ग्वार की उपज

बीकानेर, लगातार हुई बारिश के बावजूद खरीफ की अधिकांश फसलों के उत्पादन में गिरावट होनी तय है। सबसे अधिक नुकसान ग्वार में होने की आशंका है।

बीते एक महीने तक बारिश नहीं होने से सबसे अधिक नुकसान ग्वार को हुआ है जिसकी पैदावार आधी ही होने की आशंका है। कृषि विभाग के पास पहुंची रिपोर्ट के मुताबिक बीते एक महीने में बारिश नहीं होने से ग्वार की पैदावार 50 प्रतिशत कम होगी। पूर्व में चार क्विंटल प्रति हैक्टेयर पैदावार की उम्मीद थी जो अब घटकर दो क्विंटल प्रति हैक्टेयर रह जाएगी। ये स्थिति बारानी क्षेत्र की है जबकि नहरी क्षेत्र में भी 25 से 30 प्रतिशत तक पैदावार प्रभावित होगी। जिले में खरीफ की 12 लाख हैक्टेयर में बिजाई हुई थी जिसमें सवा आठ लाख हैक्टेयर में ग्वार की बिजाई हुई थी। सात लाख हैक्टेयर बारानी और सवा लाख हैक्टेयर सिंचित क्षेत्र में है।

बाजरे में भी 25 से 30 प्रतिशत पैदावार कम होने की आशंका है। दरअसल बीते एक महीने में बारिश नहीं हुई। ग्वार बाजरा सहित अन्य फसलों को लंबे समय तक पानी नहीं मिला। नुकसान मूंगफली की पैदावार में होना तय है। कृषि विभाग के मुताबिक मूंगफली में प्रति हैक्टेयर पैदावार 28 से 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की उम्मीद थी मगर अब यह पैदावार घटकर 20 से 22 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होने की संभावना है। इसकी मुख्य वजह किसानों को पर्याप्त बिजली नहीं मिलना बताया जा रहा है। कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना है कि 28 अगस्त से 12 सितंबर के बीच किसानों को कृषि कुओं पर डेढ़ से दो घंटे ही बिजली दी गई जिसके कारण फसल की सिंचाई नहीं हो सकी। हालांकि मोठ की फसल को सबसे कम नुकसान की खबर है।

तम्बाकू रोके जाने के लिए जागरूकता आवश्यक

जयपुर, 26 सितज़्बर। जिला तज़्बाकू नियंत्रण समिति की बैठक गुरूवार को पुलिस आयुज़्त श्री भूपेन्द्र कुमार दक की अध्यक्षता में पुलिस आयुज़्तालय में हुई। बैठक में तज़्बाकू एवं तज़्बाकू संबंधित उत्पादों के सेवन संबंधित नियम-कानूनों की शत-प्रतिशत पालना के निर्देश दिए गए। साथ ही तज़्बाकू प्रतिषेध नियमों के बारे में सभी स्तरों पर व्यापक प्रचार-प्रसार करने और इस सबंध में विशेष रूप से शिक्षण संस्थानो में जागरूक्ता अभियान एवं कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाने पर जोर दिया गया।

बैठक में शिक्षण संस्थानों के 100 मीटर के दायरे में तज़्बाकू उत्पादों की बिक्री पर रोक सबंधी बैनर आवश्यक रूप से लगाए जाने के भी निर्देश दिए गए। इसके साथ ही थानेवार की जाने वाली चालान की कार्यवाही की भी समीक्षा की गई। तज़्बाकू संबंधित विज्ञापनों में कोटपा अधिनियमो की होने वाली अवहेलना प्रकरणों पर गंभीरता से कार्यवाही किए जाने पर जोर देते हुए कहा गया कि तज़्बाकू सेवन से होने वाले खतरों के प्रचार के अंतर्गत कर्क रोग की बजाय स्पष्ट कैंसर का ही उल्लेख किया जाए।

बैठक में ग्रामीण क्षेत्रों के सार्वजनिक स्थलों पर तज़्बाकू एवं तज़्बाकू संबंधित उत्पादों के सेवन पर प्रतिबंध के लिए कड़ी कार्यवाही किए जाने पर चर्चा कर इस संबंध में किए गए कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत किए जाने पर भी जोर दिया गया। तज़्बाकू प्रतिषेध अधिनियमों की चर्चा करते हुए कहा गया कि सभी थानाधिकारियों द्वारा कोटपा अधिनियमों के तहत किए जाने वाले चालान और वसूली जाने वाली जुर्माना राशि के बारे में प्रतिमाह अपेडेट सूची रखी जाए। बैठक में बताया गया कि कोटपा से प्राप्त होने वाली आय को अब ऑनलाईन कर दिया गया है। बैठक में कार्यालय समय के दौरान किसी भी तरह के तज़्बाकू सेवन को प्रतिबंधित किए जाने पर भी उपस्थित सदस्यों ने सहमति जताई।

भंडारण क्षमता सहकारी समिति स्तर पर विकसित होगी

जयपुर ,एक अज़्टूबर। सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार श्री पवन कुमार गोयल ने कहा है कि राज्य की ग्राम सेवा सहकारी समितियों और क्रय-विक्रय सहकारी समितियों में भण्डारण क्षमता विकसित की जाएगी। श्री गोयल सहकार भवन में खण्डीय अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण स्तर पर खाद-बीज, कृषि जिंसों, उपभोज़्ता सामग्री के भण्डारण के लिए सभी सहकारी समितियों में गोदाम बनाए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि इसके लिए 500 ग्राम सेवा सहकारी समितियों में 10-10 लाख रुपए की लागत से गोदाम व कार्यालय भवन के लिए राज्य सरकार द्वारा राशि उपलज़्ध कराई जा रही है। इसी तरह से इनके अतिरिज़्त अन्य ग्राम सेवा व क्रय-विक्रय सहकारी समितियों में गोदामों के निर्माण के लिए आरआईडीएफ योजना में ज़्याजमुज़्त अनुदानित ऋण उपलज़्ध कराया जाएगा। इसकेअलावा गोदाम रहित शेष समितियों में समग्र सहकारी विकास परियोजना, एनएडीपी आदि से राशि दी जा सकेगी। रजिस्ट्रार श्री गोयल ने बताया कि राज्य में 600 से अधिक नई ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठन किया जा चुका है। उन्होंने निर्देश दिए कि इनके लिए स्थानीय प्रशासन से समन्वय बनाते हुए निःशुल्क भूमि आवंटन करवाये। उन्होंने आईसीडीपी परियोजना के निर्माण कार्यों का भी संभागीय व जिला अधिकारियों द्वारा निरीक्षण करने को कहा ताकि कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

मुख्यमंत्री गांधी जयंती पर खाद्य सरुक्षा योजना का राज्य स्तरीय शुभारंभ नागौर से करेंगे

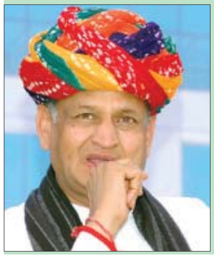

जयपुर, एक अज़्बूटर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत बहुप्रतीक्षित खाद्य सुरक्षा योजना का राज्य स्तरीय शुभारंभ बुधवार को गांधी जयंती (2 अज़्टूबर) के अवसर पर नागौर से करेंगे। इसके साथ ही सभी जिलों के प्रभारी मंत्री भी इसी दिन अपने-अपने जिलों में इसका शुभारंभ करेंगे।

केन्द्र सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत प्रदेश में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में वर्तमान में लाभान्वित करीब 40 लाख परिवारों के अलावा 50 लाख अतिरिक्त परिवार जो अभी खाद्य सुरक्षा के दायरे में नहीं आते हैं उन्हें खाद्य सुरक्षा का लाभ मिलेगा। इस योजना की शुरूआत के बाद राज्य के 686 लाख व्यक्तियों में से 464 लाख व्यक्ति खाद्य सुरक्षा के दायरे में होंगे जो कि एक अभूतपूर्व उपलज़्धि होगी।

महाराष्ट्र

तालाबों को लेकर संभलने की जरूरत, गिर रहा ऑक्सीजन का स्तर

नागपुर। शहर के तालाबों को लेकर संभलने की जरूरत आन पड़ी है। अगर 10 दिन के अंदर तालाबों में डाले गए निर्माल्य नहीं निकाले गए, तो ऑक्सीजन का स्तर इतना गिर जाएगा कि मछलियों, पशु-पक्षियों के लिए खतरनाक हो जाएगा। इस वर्ष गणेश विसर्ज के बाद 22 सितंबर 2013 को लिए गए नमूने में ऑक्सीजन का स्तर ३ पीपीएम पाया गया है, जो सामान्य ६ पीपीएम के मुकाबले काफी कम है। इसका खुलासा ग्रीन विजिल संस्था ने किया है। शहर के अन्य तालाबों का भी परीक्षण किया जाने वाला है।

शीघ्र सफाई की जरूरत : शहर की ग्रीन विजिल संस्था ने 24 अगस्त 2013 को फुटाला तालाब के जल का परीक्षण किया था। परीक्षण में पानी के भीतर पाए जानेवाले ऑक्सीजन स्तर की मात्रा 5 पीपीएम आंकी गई थी। तीज व जन्माष्टमी के दौरान ऑक्सीजन स्तर की मात्रा 4 से 3.5 पीपीएम तक पहुंच गई थी। पिछले वर्ष विसर्जन के15 दिनों बाद भी जब

तालाब की सफाई नहीं की गई, तो ऑक्सीजन स्तर गिरते हुए 2 पीपीएम तक जा पहुंचा। ऐसा माना जाता है कि ऑक्सीजन स्तर यदि 2 पीपीएम तक गिरता है, तो तालाब की मछलियां मरने लगती हैं। संस्था ने मनपा को आगाह किया है कि वक्त रहते तालाबों का निर्माल्य निकाल लिए जाए, वर्ना पिछले वर्ष की ही तरह इस वर्ष भी ऑक्सीजन स्तर गिरने की संभावना है।

शक्कर सहकारी कारखाने में दस हजार करोड़ का घोटाला : मेधा पाटकर

पुणे। समाजसेवी मेधा पाटकर ने आरोप लगाया कि सहकारी शक्कर कारखाने में खरीदी-बिक्री प्रक्रिया में 10 हजार करोड़ का घोटाला हुआ है। यह प्रक्रिया रद्द कर प्रकरण की न्यायालयीन जांच हो । इस मांग को लेकर 9 अक्टूबर को मंत्रालय के सामने मोर्चा निकालने की बात भी उन्होंने कही।

मोर्चा के बारे में जानकारी देने के लिए आयोजित पत्रकार वार्ता में पाटकर ने बताया कि सहकार की निर्मिति जिन्होंने की उनके वारिस कहनेवालों ने ही सहकार को खत्म करने की ठान ली है। सहकारी शक्कर कारखानों की खरीदी-बिक्री की प्रक्रिया में 10 हजार करोड़ का महाघोटाला हुआ है। इसलिए यह प्रक्रिया रद्द होनी चाहिए। प्रकरण की न्यायालयीन जांच होनी चाहिए। यह प्रक्रिया सहकार पध्दति से शुरू की जानी चाहिए।

प्रदर्शनी में समुद्र के पानी से बिजली उत्पादन के विद्यार्थियों ने किए प्रयोग

नागपुर। भारत को सशक्त और विश्व स्तर पर महासत्ता बनाने के लिए विद्यार्थियों को विज्ञान व तकनीक को समझना होगा। यह कहना है रोजगार गांरटी योजना मंत्री नितीन राऊत का। वे डा. आंबेडकर महाविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय प्रदर्शनी इन्स्पायर अवार्ड के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। प्रदर्शनी का आयोजन भारत सरकार के विज्ञान व तकनीकी विभाग, राज्य के शालेय शिक्षण विभाग व डा. आंबेडकर महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में किया गया है

दो महीने में लागू होगा नया भूमि अधिग्रहण कानून

मुंबई, प्रेट्र। संसद से पारित हो चुका भूमि अधिग्रहण कानून अगले दो महीने के देश में लागू हो जाएगा। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने इस कानून पर मुहर लगाई है।

ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश ने बयाया कि अगले 60 दिनों के भीतर सरकार इस संबंध में अधिसूचना जारी कर देगी। उन्होंने कहा कि नया कानून 119 वर्ष पुराने औपनिवेशिक और लोकतंत्र विरोधी भूमि अधिग्रहण कानून की जगह लेगा।

जयराम रमेश ने कहा कि नया कानून लागू होने के बाद देश में जबरन भूमि अधिग्रहण पर रोक लग जाएगी। साथ ही किसानों को उनकी जमीन का उचित मुआवजा भी मिल सकेगा।

उन्होंने कहा कि राज्यों को अपना अलग भूमि अधिग्रहण कानून बनाने का अधिकार है, लेकिन वे किसी भी सूरत में केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कानून से कमजोर नहीं होना चाहिए।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com